Regn. No. 1537/2021

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्त्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ।।

प्रभु सेवा परिवार

(इंडिया ट्रस्ट एक्ट, 1882 के तहत निगमित एक धार्मिक ट्रस्ट
पंजिकरण संख्या 1537/2021)

स्मारिका

2025

प्लॉट नंबर 30 वरूण एन्क्लेव, ग्रेटर नोएडा
+91- 9839639952, +91- 8808836666
prabhusewaparivar@gmail.com

।। श्री गणेशाय नमः ।।

प्रथमं वक्रतुडं च एकदंत द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्ण पिंगाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ।।
लंबोदरं पंचम च पष्ठं विकटमेव च ।
सप्तमं विध्नराजेंद्रं धूम्रवर्ण तथाष्टमम् ।।
नवमं भाल चंद्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजानन् ।।

श्री राम जी वंदना

औरउ एक कहउँ निज चोरी ।
सुनु गिरिजा अति दृढ़ मति तोरी ।।
कागभुसुंडि संग हम दोऊ ।
मनुजरूप जानइ नहिं कोऊ ।।
परमानंद प्रेमसुख फूले ।
बीथिन्ह फिरहिं मगन मन भूले ।।
यह सुभ चरित जान पै सोई ।
कृपा राम के जापर होई ।।

जेहि सरीर रति राम सों सोइ आदरहिं सुजान ।
रूद्रदेह तजि नेहबस बानर भे हनुमान ।।

प्रभु सेवा परिवार

PSP

Regn. No. 1537/2021

स्मारिका : 2025

संस्थापकः
पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी

राष्ट्रीय अध्यक्षः
श्री सतीश श्रीवास्तव

सम्पादकः
श्रीमती सोनल खरे

प्रकाशक
प्रभु सेवा परिवार (पंजी.)
प्लाट संख्या-30, वरुण इंक्लेव
ग्रेटर नोयडा-201310
फोन- +91- 9839639952,
+91- 8808836666
ई-मेलः prabhusewaparivar@gmail.com

स्मारिकाः 2025 में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण, सम्बन्धित लेखकों/सामग्री प्रदाताओं के हैं । सम्पादक अथवा प्रकाशक या मुद्रक का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है। यह पत्रिका केवल निजी वितरण के लिए है।

अनुक्रमणिका

1. प्रभु सेवा परिवार का गीत 1
2. प्रभु सेवा परिवार– एक परिचय 2
3. पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ला–एक परिचय........ 3
4. संस्थापक का संदेश 4
5. अध्यक्ष का संदेश 5
6 संपादकीय........6
7. गत वर्ष आयोजित धार्मिक यात्रायें एवं कथायें 7–12
8. गृहस्थाश्रम निर्वहन कला 13, 14
9. गुरू पूर्णिमा गीत 14
10. चंडीगढ़ भवन हरिद्वार 15
11. सनातन धर्म, विज्ञान और गुरू 16
12. गुरूमत्र का प्रभाव 17
13. हरि भगत 18
14. आदर्श शिष्य 19, 20
15. प्रभु सेवा परिवार गीत 20
16. प्रकृति संरक्षण ईश्वर की उपासना 21–22
17. सुंदरकाण्ड भजन 22
18. संतो की वाणी संत जनों को समर्पित 23
19. ज्ञान पर चिंतन 24, 25
20. देह रूप मन्दिर 25
21. भगवन्नाम महिमा .... 26.
22. हमारे सदस्य 27–30
23. सम्मानित सदस्य गण 31, 32
24. बैलेंस सीट 33
25. दानदाताओं के नाम 34
25. प्रभु सेवा परिवार कथा आयोजन समिति 35

प्रभु सेवा परिवार का गीत

(1)

हमारा प्रभु सेवा परिवार।
प्रभु के भक्तों का परिवार।।

राम कथा भागवत कराता,
सबको तीरथ धाम घुमाता।
कथा सुनें सब तीरथ करके,
हो जावें भवपार।
हमारा प्रभु सेवा परिवार।।

निर्धन दीन जनों की सेवा,
गो सेवा और प्रभु की सेवा।
सेवा जिसका मूल मंत्र है,
करता पर उपकार।
हमारा प्रभु सेवा परिवार।।

एक बनें हम, नेक बनें हम,
मानवता के काम करें हम।
यही हमारा सत्प्रयास है,
श्रेष्ठ बने संसार।
हमारा प्रभु सेवा परिवार।।

(2)

हमारा प्रभु सेवा परिवार ।
प्रभु के भक्तो का परिवार ।।

ये जग प्रभु का रूप है प्यारा,
जग सेवा ही मंत्र हमारा ।
दीन जनों की सेवा निसदिन दीन जनो से प्यार,
हमारा प्रभु सेवा परिवार ।।

सेवा सबसे बड़ा धर्म है,
सेवा ही तप है, सुकर्म है।
सेवा सबसे बड़ी है पूजा सृष्टि का आधार,
हमारा प्रभु सेवा परिवार।।

आओ हम सब हाथ बढायें,
सेवा यज्ञ को सफल बनायें ।
जग सेवा प्रभु सुमिरन करके हो जाये भव पार,
हमारा प्रभु सेवा परिवार ।।

प्रभु सेवा परिवार - एक परिचय

प्रभु सेवा परिवार

संस्थापक
श्री रमेश भाई शुक्ल
मो० 9839639952

राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री सतीश श्रीवास्तव
मो० 8808836666

राष्ट्रीय महासचिव/कोषाध्यक्ष
श्री अभिषेक श्रीवास्तव
मो० 9582435770

स्थापना : 15 सितम्बर वर्ष 2021
पंजीकरण संख्या : 1537 / 2021
ट्रस्ट पंजीकरण एक्ट : इण्डिया ट्रस्ट एकट 1882 के तहत पंजीकृत
आयकर अधिनियम : आयकर अधिनियम 1961 की धारा 12 A और 80 G के तहत पंजीकृत

उद्देश्य :

(1) जनमानस का कल्याण : प्रभु सेवा परिवार का मुख्य उद्देश्य जनमानस का कल्याण करना है और इस उद्देश्य की पूति हेतु तीर्थ यात्राओं, सत्संग धार्मिक कथाओं, भागवत् कथा आदि का आयोजन ट्रस्ट द्वारा समय–समय पर कराया जाना।

(2) सनातन धर्म व संस्कृति का प्रसार : सनातन धर्म एवं संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार हेतु धार्मिक स्थलों (मन्दिरों) एवं धार्मिक संस्थानो को दान देना ।

(3) गौ सेवा करना : गौमाता की सेवा हेतु धनराशि उपलब्ध कराना जिसके द्वारा गौ शालाओं का रख–रखाव भली भांति किया जा सके एवं गौमाता का संरक्षण एवं सेवा हो सके।

(4) निर्धनों का सहयोग : निर्धनों की दैनिक आवश्यकताओं (भोजन, वस्त्र आदि) की पूर्ति हेतु वित्तीय सहयोग प्रदान करना।

(5) वंचित वर्ग का सहयोग : वंचित वर्ग के सहयोग हेतु वृद्धाश्रम, अनाथालय एवं औषधालयों की स्थापना एवं संचालन में सहयोग करना।

(6) अन्य धार्मिक संस्थानों का सहयोग : अन्य धार्मिक संस्थान यदि समाज हित में संलग्न होकर कोई आयोजन करता है तो उस धार्मिक आयोजन से सहभागी बनकर सहयोग प्रदान करना ।

(7) निर्धन विद्यार्थियों के लिए सहयोग : वह कुशल निर्धन विद्यार्थी जो पुस्तक नोट बुक आदि की व्यवस्था करने में अक्षम हैं उनकी शिक्षा की व्यवस्था हेतु सहयोग करना।

(8) शिक्षा, स्वच्छता के प्रति जागरूकता : अशिक्षित नागरिकों में शिक्षा के महत्व को समझाना एवं स्वच्छता का महत्व बताना साथ ही गन्दगी से होने वाली बीमारियों एवं उससे बचाव पर चर्चा करना ।

प्रभु सेवा परिवार की प्रेरणा का मुख्य स्रोत स्वामी विवेकानन्द जी का यह विश्व व्यापी विचार है ।
अज्ञानी लोग जिसे मनुष्य कहते है, मैं उस नारायण का सेवक हूँ। अर्थात् 'नर सेवा – नारायण सेवा'

इस ट्रस्ट का एकमेव उद्देश्य प्रत्येक उस व्यक्ति का हर सम्भव स्तर पर सहयोग करना है जो मानवीय मूल्यों के आधार पर सहयोग आकांक्षी है। प्रभु सेवा परिवार 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना से कार्य करते हुए निः स्वार्थ भाव से वंचित वर्ग की सेवा हेतु तन मन धन से तत्पर है। इसके साथ–साथ यह प्रभु सेवा परिवार प्रत्येक व्यक्ति में उच्च मानवीय मूल्यों एवं आध्यात्मिकता का विकास करते हुए देश हित में सभ्य नागरिको के निर्माण में सहयोग कर रहा है। अर्थात् प्रभु सेवा परिवार जन कल्याण एवं सामाजिक कल्याण के लिए पूर्णतः समर्पित है।

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल- एक परिचय

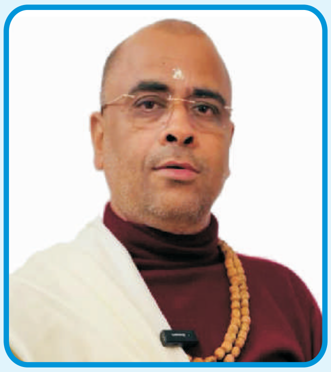

परम पूज्य सन्त श्री रमेश भाई शुक्ल जी का जन्म ज्येष्ठ मास की कृष्ण चतुर्थी 1973 में शारदा नदी के तट पर स्थित पचपेड़ी ग्राम जिला लखीमपुर खीरी उत्तर प्रदेश में हुआ है। गुरूजी के माताजी श्रीमती सुधालता सात्विक गृहणी हैं और पिताजी स्व० श्री ऋषि नाथ प्रसाद शुक्ल जो कि अध्यापक रहे और साठ साल की उम्र तक अध्यापक का कार्य किया। वे बहुत ही भगवत प्रेमी व्यक्तित्व के धनी थे।

गुरूजी की बचपन से रूचि हिन्दू शास्त्र के बारे में जानने और शोध करने की थी, उन्होंने हमेशा अपना समय उसी लिए समर्पित किया। वर्ष 1996 में स्नातकोत्तर की शिक्षा पूरी करने के बाद शिशु मन्दिर में आचार्य के पद पर कार्य कियें। उसी वर्ष गुरूजी का विवाह श्रीमती ज्योत्सना देवी के साथ हुआ जो कि एक आदर्श धर्मपत्नी एवं कुशल गृहणी के रूप में साथ निभा रही है। गुरूजी के दो सन्तान—एक पुत्री एवं एक पुत्र हैं जो अभी शिक्षण कार्य कर रहे हैं।

लगभग तीन साल शिक्षण कार्य करने के बाद वर्ष 2000 में अन्ततः उन्हें भगवान की कृपा प्राप्त हुई और गुरूजी ने प्रभु की सेवा रामचरित मानस, भागवत कथा, शिव कथा एवं हनुमान कथा का आध्यात्मिक अध्ययन करके, कथा के रूप में आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसार करने के उद्देश्य से आगे बढ़े तब से निरन्तर प्रभु की सेवा में लगे हैं। उनकी भगवान की कथाओं के माध्यम से समाज में हिन्दू संस्कृति के मूल्यों का प्रसार करना समाज में फैली कुरीतियों को खतम करने का प्रयास कर रहे हैं।

गुरूजी ने शास्त्रों का अध्ययन किया, इसके अलावा उन्होंने सभी हिन्दू शास्त्रों के साथ अन्य धर्मो के बारे में भी अध्ययन किया। यूट्यूब, फेसबुक और टी॰वी॰ चैनलों और अन्य सोशल मीडिया के माध्यमों से वह लोगों के सामने श्रीराम कथा, श्रीमद्भागवत कथा, हनुमान कथा एवं शिव कथा का बहुत ही सरल शब्दावली में आध्यात्मिक एवं तार्किक व्याख्या करके लोगों में भगवत भक्ति का प्रचार करते हैं और काफी लोग उनका अनुसरण कर रहे हैं।

गुरूजी के कार्यो की बात करें तो वह एक अच्छे कथा वाचक हैं और अपनी कथा के माध्यम से लोगों को अच्छे रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं ताकि देश एवं समाज का अच्छा विकास हो, लोगों के सोच में भगवान की भक्ति हो। अपनी कथा में वह हमेशा लोगों को भक्ति के मार्ग पर चलने की सलाह देते हैं ताकि उन्हें एक अच्छा जीवन जीने का अवसर मिल सके।

गुरूजी ने लोगों के अन्दर प्रभु की भक्ति का संचार होता रहे, इसी के लिए प्रभु सेवा परिवार ट्रस्ट का गठन 15/09/2021 को किया। गुरूजी प्रभुसेवा परिवार के संस्थापक हैं और इस ट्रस्ट के माध्यम से भारत में या भारत के बाहर पवित्र स्थानों में विभिन्न कथाओं का संचालन कर रहे है। गुरूजी गरीब असहाय एवं जरूरतमंदों का सहारा भी बन रहे हैं और ट्रस्ट के माध्यम से उन्होंने जरूरतमंदों की सहायता के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया है।

गुरूजी का निवास स्थान और सम्पर्क सूत्र इस प्रकार है:—

प्रभु सेवा धाम, 7/633 A, विकास नगर, लखनऊ। मोबाइल: 9839639952

संस्थापक का संदेश

Regn. No. 1537/2021

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी
संस्थापक
प्रभु सेवा परिवार

प्रभु सेवा परिवार की स्थापना के चार वर्ष पूरे होने पर मेरी हृदय से शुभकामनाये । चारों दिशाओं में इस परिवार के शुभ कार्यो की सुगंध फैले – ऐसी प्रभु से प्रार्थना है।

चार वर्षो में हम लोगों ने सैकड़ो भक्तों के साथ चारों धाम में भगवान की कथा गायन किया – सात पुरियों में से चार पुरियों में कथा गायन किया – अयोध्या / काशी / हरिद्वार / द्वारिकापुरी और भी कई सेवा कार्य परिवार द्वारा होते रहते है। इस परिवार से और बड़े–बड़े सेवा कार्य संपादित हो – ऐसी प्रभु से प्रार्थना है।

आप सब परिवार में जुड़े – औरो को जोड़े

रमेश भाई शुक्ल

अध्यक्ष का संदेश

श्री सतीश श्रीवास्तव
राष्ट्रीय अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Regn. No. 1537/2021

लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारूण्यरूपं करूणाकरंतं श्रीरामचंद्रं शरणं प्रपद्ये ।।

प्रभु सेवा परिवार के चतुर्थ स्थापना दिवस पर मै पूरे परिवार की तरफ से आप सभी को हार्दिक शुभकामनाये देता हूँ। जैसा आप सबको विदित है कि पिछले वर्ष की भांति पुनः अध्यात्म से आधारित स्मारिका छपवाई जा रही है जिसका श्रेय गुरूजी को जाता है।

गुरू जी लगन निष्ठा एवं कड़ी मेहनत से भगवान का गुणगान चारो दिशाओ मे फैला रहे है जिससे जन मानस का कल्याण हो रहा है। जिस उद्देश्य के लिए इस संस्था की स्थापना की है उसमे सफलता मिल रही है और आप लोगो के सहयोग से प्रभु सेवा परिवार निरन्तर आगे बढ़ता रहेगा।

एक बार पुनः गुरू जी के चरणो की वन्दना करते हुये आप सभी भाईयो और बहनो को अभिनन्दन एवं बहुत बहुत शुभकामनाये ।

धन्यवाद

Regn. No. 1537/2021

सम्पादकीय

श्रीमती सोनल खरे
सम्पादक

प्रभु सेवा परिवार की चतुर्थ स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर विगत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी स्मारिका 2025 प्रकाशित किया जा रहा है। प्रभु सेवा परिवार द्वारा स्मारिका का प्रकाशन किया जाना निसन्देह प्रशंसनीय है। प्रभु सेवा परिवार ने विगत वर्षो की तरह इस वर्ष भी बहुत ही सराहनीय कार्य किया है–

1. प्रयाग महाकुम्भ के अवसर पर बसंत पंचमी से माघ पूर्णिमा तक (02/02/2025 से 12/02/2025) कुम्भ क्षेत्र में श्री राम कथा का सफल आयोजन किया जिसमें भारी संख्या में लोगो भण्डारा प्रसाद का वितरण किया गया साथ ही कुम्भ क्षेत्र में चिकित्सा सुविधा भी उपलब्ध कराया । इस श्रीराम कथा का लाइव प्रसारण ईश्वर चैनल पर किया गया ।

2. 4 मार्च से 11 मार्च 2025 तक महाराज परीक्षित जी की भागवत कथा श्रवण स्थल शुक्रताल उ0प्र0 में श्रीमद् भागवत कथा ज्ञानयज्ञ का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया । जिस अवसर पर सन्तो का भण्डारा प्रसाद का वितरण किया गया ।

3. गुरू पूर्णिमा के शुभ अवसर पर प्रभु सेवा धाम लखनऊ गुरूजी के निज निवास पर 7/7/2025 से 9/7/2025 तक दशरथ चरित्र पर प्रवचन एवं 10/7/2025 गुरूपूर्णिमा के दिन गुरूपूजन, गुरूदीक्षा, गुरूतत्व पर प्रवचन के साथ विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया ।

4. 20/7/2025 से 27/7/2025 तक ए.सी. मार्केट हावड़ा में कृष्ण भक्त मीरा चरित्र पर बहुत ही सुन्दर कथा का आयोजन किया गया।

5. 14/8/2025 से 20/8/2025 तक गुरूजी के सानिध्य में श्रीलंका की विदेश यात्रा में अशोक वाटिका में सुन्दर पाठ का सफल आयोजन किया साथ ही साथ धार्मिक स्थलो का दर्शन मिला साथ ही मे अध्यात्म भक्ति और सांस्कृतिक मूल्यो को भी निकट से अनुभव करने का सौभाग्य मिला। गुरू जी द्वारा समय–2 पर सुन्दर कथा का श्रवण लाभ प्राप्त हुआ।

6. 6/9/2025 से 13/9/2025 तक श्राद्ध पक्ष में पितरो के उद्धार हेतु हरिद्वार में चण्डीगढ़ भवन श्रीमद् भागवत कथा का सफल आयोजन के साथ भण्डारे का भी आयोजन किया गया जिनसे काफी संख्या में लोगो का लाभ प्राप्त हुआ ।

आगामी कार्तिक मास के पुण्य अवसर पर अयोध्या धाम में राम लला के स्थापना के बाद ग्यारह दिवसीय बाल्मीकी रामायण पर आधारित श्री राम कथा का आयोजन निश्चित किया गया है यह श्री राम कथा का आयोजन 26/10/2025 से सिया राम किला झुनकी घाट अयोध्या जी में सुनिश्चत है।

गत वर्ष आयोजित धार्मिक यात्रायें एवं कथायें

1. श्रीराम कथा (प्रयाग महाकुम्भ)

प्रयाग महाकुम्भ के अवसर पर बसंत पंचमी से माघ पूर्णिमा तक (02/02/2025 से 12/02/2025) कुम्भ क्षेत्र में श्री राम कथा का सफल आयोजन किया जिसमें भारी संख्या में लोगो भण्डारा प्रसाद का वितरण किया गया साथ ही कुम्भ क्षेत्र में चिकित्सा सुविधा भी उपलब्ध कराया । इस श्रीराम कथा का लाइव प्रसारण ईश्वर चैनल पर किया गया ।

2. श्रीमद् भागवत कथा (शुकताल)

4 मार्च से 11 मार्च 2025 तक महाराज परीक्षित जी की भागवत कथा श्रवण स्थल शुकताल उ0प्र0 में श्रीमद् भागवत कथा ज्ञानयज्ञ का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया । जिस अवसर पर सन्तो का भण्डारा प्रसाद का वितरण किया गया ।

3. गुरूपूर्णिमा (प्रभु सेवा धाम लखनऊ)

गुरू पूर्णिमा के शुभ अवसर पर प्रभु सेवा धाम लखनऊ गुरूजी के निज निवास पर 7/7/2025 से 9/7/2025 तक दशरथ चरित्र पर प्रवचन एवं 10/7/2025 गुरूपूर्णिमा के दिन गुरूपूजन, गुरूदीक्षा, गुरूतत्व पर प्रवचन के साथ विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया ।

5. कृष्ण भक्त-मीरा चरित्र (हावड़ा)

02/7/2025 से 27/7/2025 तक ए.सी. मार्केट हावड़ा में कृष्ण भक्त मीरा चरित्र पर बहुत ही सुन्दर तथा का आयोजन किया गया।

4. श्रीलंका की विदेश यात्रा

14/8/2025 से 20/8/2025 तक गुरूजी के सानिध्य में श्रीलंका की विदेश यात्रा में अशोक वाटिका में सुन्दर पाठ का सफल आयोजन किया साथ ही साथ धार्मिक स्थलो का दर्शन मिला साथ ही मे अध्यात्म भक्ति और सांस्कृतिक मूल्यो को भी निकट से अनुभव करने का सौभाग्य मिला। गुरू जी द्वारा समय–2 पर सुन्दर कथा का श्रवण लाभ प्राप्त हुआ।

6. श्राद्ध पक्ष में श्रीमद् भागवत कथा (हरिद्वार)

6/9/2025 से 13/9/2025 तक श्राद्ध पक्ष में पितरो के उद्धार हेतु हरिद्वार में चण्डीगढ़ भवन श्रीमद् भागवत कथा का सफल आयोजन के साथ भण्डारे का भी आयोजन किया गया जिनसे काफी संख्या में लोगो का लाभ प्राप्त हुआ ।

4. गत वर्ष में आयोजित अन्य कथाओं का विवरण

क्र०सं०	स्थान	दिनांक	कथा
1	पचौरा ग्वालियर	07/10/2024 से 15/10/2024	भागवत कथा
2	दुबई यात्रा	18/10/2024 से 27/10/2024	विदेश यात्रा
3	खदरा लखनऊ	07/11/2024 से 17/11/2024	श्री राम कथा उत्तरकाण्ड
4	दुर्गापुर पश्चिम बंगाल	20/11/2024 से 28/11/2024	श्री शिव कथा
5	पतारा सीतापुर	06/12/2024 से 13/12/2024	श्रीमद् भागवत कथा
6	पूना महाराष्ट्र	04/01/2025 से 12/01/2025	श्री राम कथा
7	खरसिया छत्तिसगढ़	15/01/2025 से 23/01/2025	श्री कृष्ण कथा
8	मूड़पार हसौद छत्तिसगढ़	24/01/2025 से 31/01/2025	शिव कथा
9	प्रयाग उ0प्र0	02/02/2025 से 12/02/2025	श्री राम कथा
10	एम रोड लखनऊ उ0प्र0	13/02/2025 से 20/02/2025	श्रीमद् भागवत कथा
11	मालकान गिरि उड़ीसा	22/02/2025 से 28/02/2025	श्री कृष्ण कथा
12	शुक्रताल उ0प्र0	04/03/2025 से 11/03/2025	श्रीमद् भागवत कथा
13	चौरी बाजार भदोही उ0प्र0	16/03/2025 से 23/03/2025	श्री भक्तमाल कथा
14	गुमावा राय बरेली उ0प्र0	24/03/2025 से 31/03/2025	श्री हनुमत कथा
15	गायत्री पुरन सन्त कबीर नगर उ0प्र0	02/04/2025 से 10/04/2025	श्री राम कथा
16	सेक्टर–29, चण्डीगढ़	12/04/2025 से 19/04/2025	श्रीमद् भगवत कथा
17	सेक्टर–20, चण्डीगढ़	19/04/2025 से 27/042025	श्री हनुमत कथा
18	जानकीपुरम लखनऊ, उ0प्र0	28/04/2025 से 06/05/2025	श्री राम कथा
19	रावन खीदरा छत्तिसगढ़	09/05/2025 से 15/05/2025	शिव कथा
20	त्रिवेनी नगर लखनऊ उ0प्र0	17/05/2025 से 23/05/2025	गऊ कथा
21	तिघरा रीवा, म0प्र0	25/05/2025 से 02/06/2025	शिव कथा
22	बडहल गंज गोरखपुर उ0प्र0	11/06/2025 से 19/06/2025	श्री राम कथा
23	पूणे महाराष्ट्र	22/06/2025 से 29/06/2025	श्री राम कथा
24	लखनऊ उ0प्र0	07/07/2025 से 10/07/2025	दशरथ चरित गुरूपूर्णिमा विशेष
25	लखनऊ उ0प्र0	13/07/2025 से 17/7/2025	शिव कथा
26	हावड़ा प0बं0	20/07/2025 से 27/07/2025	मीरा चरित्र
27	लिलुआ, हावड़ा प0बं0	31/07/2025 से 08/08/2025	श्रीराम कथा
28	भूटान यात्रा	09/08/2025 से 12/08/2025	भूटान यात्रा
29	श्रीलंका यात्रा	14/08/2025 से 21/08/2025	श्रीलंका यात्रा
30	अमेठी उ0प्र0	23/08/2025 से 02/09/2025	श्री राम कथा
31	हरिद्वार, उतराखण्ड	06/09/2025 से 13/09/2025	श्रीमद् भागवत कथा

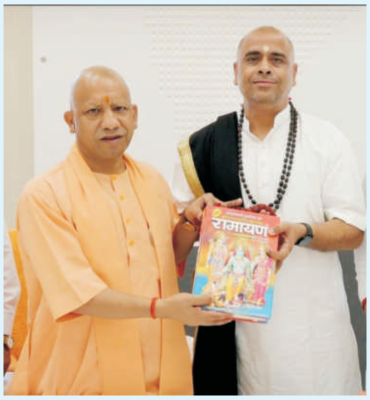
रामायण

RAJ BHAVAN

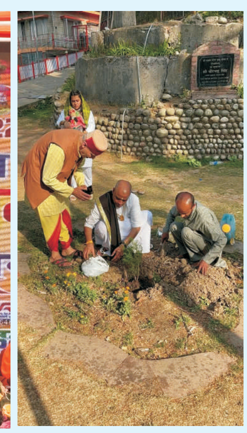

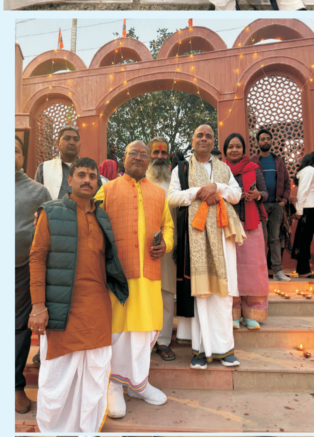

॥ श्री गणेशाय नमः॥
श्री भक्तमाल कथा
श्री प्रभु सेवा परिवार द्वारा आयोजित कथा
कथा प्रारम्भ
दिनांक 16 मार्च 2025 से | दिनांक 23 मार्च 2025 तक
समयः- सायं 5 बजे से 8 बजे तक
कथावाचकः-
परम् पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी महाराज
भक्तों की कथा सुनने भगवान स्वयं पधारते हैं।

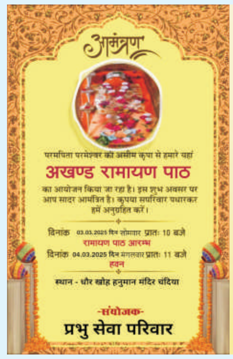

आमंत्रण
परमपिता परमेश्वर की असीम कृपा से हमारे यहां
अखण्ड रामायण पाठ
का आयोजन किया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर आप सादर आमंत्रित है। कृपया सपरिवार पधारकर हमें अनुग्रहित करें।
दिनांक 03.03.2025 दिन सोमवार प्रातः 10 बजे
रामायण पाठ आरम्भ
दिनांक 04.03.2025 दिन मंगलवार प्रातः 11 बजे
हवन
स्थान - धौर खोह हनुमान मंदिर चंदिया
-संयोजक-
प्रभु सेवा परिवार

गरीब कन्याओं का सामूहिक विवाह
20 अप्रैल 2025 (रविवार)
दोपहर 1:00 बजे अभिजीत मुहूर्त में

श्री शुकदेव सतसंग भवन

प्रभु सेवा परिवार
स्वतंत्रता दिवस

गृहस्थाश्रम निर्वहन कला

श्री राजेन्द्र नाथ चौबे
लखनऊ

भक्ति, भक्त, भगवंत, गुरू चतुर्नाम वपु एक ।
इनके पद वंदन किये नासत विघ्न अनेक ।।

जिनको माध्यम बनाकर हमें इस स्तर पर स्थापित किया उस मातृ, पितृ, गुरू के साथ ही परमात्मा के चरणों में सादर नमन सहित मैं सर्व प्रथम विनम्र अनुरोध करना चाहूंगा कि इस लेख में स्वयं का कुछ भी नहीं है, संतगण, सदगुरू एवं सद्ग्रंथी के आश्रय से इस मंदबुद्धि में जो ग्रहण हुआ, इस विषय पर रखने का प्रयास है:

अध्यात्म पथ के पथिकों को एकांत सेवन आवश्यक होने के साथ ही सांसारिक संबंध इसमें बन्धन कारक हैं, ऐसी सामान्य धारणा है। पतित पावनी गंगा जी के तीन स्वरूपों की चर्चा सत्संग में आती है, पहली जो प्रभु चरणों से निकलीं मां 'भागीरथी' दूसरी प्रभु वाणी के रूप में प्रगट हुई 'श्रीमद्भगवदगीता' जिसके विषय में कहा जाता है 'गीता गंगोदकं पीत्वा, पुनर्जन्म न विद्यते' तथा तीसरी गोस्वामी श्री तुलसीदास जी द्वारा रचित श्रीरामचरित मानस । मानस की दो चौपाइयां मानव जीवन की दुर्लभता एवं उद्देश्य को पुष्ट करती है।

बड़ेभाग मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ सब ग्रंथन गावा ।
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा, पायि न जेहि परलोक संवारा ।।

निश्चित ही प्रभु की अहैतुकी कृपा से चौरासी लाख योनियों में से मानव जीवन एक दुर्लभ उपहार के रूप में हमें प्राप्त है जिसमें भोग के साथ ही कर्म कर परलोक संवारने की भी छूट है। तनिक चिंतन करें तो यह पायेंगे कि प्रारब्धवश अर्जित पुण्य–पाप का भोग तो हमें प्रभु किसी भी योनि में जन्म देकर सुलभ करा देते किन्तु मानव जीवन प्रदान करना, उनकी परम कृपा का द्योतक है। जिस स्थान, परिवेश एवं जिनके बीच में हम पोषित हो रहे हैं उसका भी अदभुत रहस्य देने अथवा लेने का प्रारब्ध वश उसमें निहित है। अनुकूलता में व्यक्ति को सुख की अनुभूति होती है। यदि हमारी मनोवृत्ति स्वयं को सुख पहुंचाने की है तो व स्वार्थपरक, निन्दनीय होने के साथ ही बन्धन व मोहकारी होगी । थोड़ी गहराई से चिन्तन करें तो देखेंगे कि प्राप्त/अर्जित संपदा विषय, भोग, इस क्षणभंगुर परिवर्तनशील जगत में स्थायी तो रहेंगे नहीं और यदि रहते भी है तो क्या हम सदैव उन्हें भोगने के लायक रह पायेंगे? अवश्य उत्तर नहीं में ही आयेगा । संसार से वियोग होना ही है यही शाश्वत सत्य है। इस विषय में थोडा और विचार करेंगे तब पायेंगे कि जब संसार के विषय भोगों को भोगने में हम असमर्थ होंगे अथवा वियोग होगा तो निश्चित कष्ट की अनुभूति के साथ ही इन सबके चिंतन स्वरूप चौरासी लाख योनियों का चक्कर भी होगा। जीवन में कामनांए पूर्ण होने पर लोभ का और अधिक बढ़ना तय है तथा यदि वे पूरी न हो पायें तो क्रोध या दुःख का उत्पन्न होना स्वाभाविक है जो पतन का मार्ग भी प्रशस्त करता है। इस संबंध में श्री गीता जी का दर्शन करें :

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।।

इसलिए कामनाओं को सबकी जड़ जानकर इसका सर्वथा त्याग ही श्रेयस्कर है। इसलिए अपने पुरूषार्थ कर्मों को करते समय यह भाव अच्छी तरह से बैठा लें कि यह शरीर दूसरों की सेवा के लिए प्रभु ने कृपा पूर्वक प्रदान किया है तथा जीव (आत्मा) परम पिता का अंश है, परमात्मा ही सिर्फ अपने है। इस संबंध में मानस में बताते है:

ईश्वर अंश जीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुख रासी ।।

चितन में यह भी स्पष्ट होता है कि प्रकृति का अंश सदैव परिवर्तन प्राप्त करते हुए प्रकृति के साथ ही रहता है किन्तु जीवात्मा परमात्मा का अंश होते हुए भी प्रकृति के अंश को आत्मसात कर विभिन्न योनियों में भटकने हेतु विवश होता है। अन्य किसी योनि में कर्म करने की योग्यता नहीं है परन्तु मनुष्य जीवन में करने के साथ ही जानने की एवं मानने की शक्ति है। जानने में बुद्धि, विवेक के आश्रय ज्ञानार्जन, तर्क वितर्क की आवश्यकता होती है। मानने में आस्था, समर्पण के साथ ही त्याग की प्रधानता है। चूंकि कर्ममार्ग एवं ज्ञान मार्ग में फिसलन अधिक है इसलिए कलयुग में भक्ति मार्ग को उपयुक्त कहा जाता है। अतः इस जीवन में विवेक पूर्वक सद्गुरू के शरणागत हो जो भी सम्पदा प्रभु कृपा से प्राप्त है यथा पिता, पुत्र, पुत्री, पति, पत्नी आदि सभी स्वरूपों में अपने कर्तव्य पथ पर श्रेष्ठतम (100%) बिना किसी से तुलना किए हुए प्रदान करना चाहिए ताकि भौतिक जीवन की अच्छी दिशा प्रशस्त हो। मन में भाव आ सकता है कि जब सबकी सोच, कार्यशैली सकारात्मक होगी तभी जीवन कल्याणकारी होगा, मात्र एक व्यक्ति से परिवार अथवा समाज में क्या भला हो सकता है। इसका समाधान खोजने के बजाय हम स्वयं के अधीन सकारात्मक व्यवहार को मानस में उद्धृत चौपाई का दृढ़ आश्रय लेकर चलें तो निश्चित ही सुखद अनुभूति होगीः

उमा संत कइ इहइ बड़ाई, मंद करत जो करइ भलाई ।।

जहां भी अपने संबध हैं उन संबंधों में "आदर्श" विशेषण युक्त हो जाये (आदर्शपिता, आदर्श पति आदि) इसका सचेष्ट रहकर प्रयास किया जाए। परन्तु यह तभी संभव है जब हम अपने अधिकारों की परवाह किए बिना अपनी कर्त्तव्यपरायणता पर आरूढ़ रहें। यदि किसी संबंध में कहीं अपमान, पीड़ा, अपयश अथवा तिरस्कार भी मिले तब भी उन्हें कैसे सुख मिले अपना सद्व्यवहार प्रदान करें, क्योंकि यह भी एक प्रकार की कसौटी है कि जब वो व्यक्ति अपना व्यवहार नहीं छोड़ पा रहा है तो मै। अपना सद्व्यवहार क्यो त्यागूं। इस प्रकार की सोच अन्तर्मन को सुख प्रदान करेगी ।

अंत में मुख्य सूत्र के रूप में मैं यही कहना चाहूंगा कि प्रभु ने हम सभी को परिवार/संसार में सेवा हेतु भेजा है तथा सिर्फ भगवान ही मेरे अपने है, सैदव इस भाव का स्मरण रखकर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। इस भाव से व्यवहार कर्म करने पर अपने सभी कर्म भगवान के काम, सबकी सेवा भगवान की सेवा यहां तक कि अपना कमाना, भोजन करना, सोना आदि सभी कार्य सेवा के सहयोगी कार्य होकर परमात्मा की आराधना के स्वतः अंश बना जाएंगे।

।। जय जय श्री सीताराम ।।

गुरू पूर्णिमा गीत

श्री ईश्वर शरन मिश्र
गोण्डा (उ०प्र०)

ये 'प्रभु सेवा धाम' निराला, मिलता यहाँ ज्ञान भक्ति का प्याला ।
विकास नगर लखनऊ वाला, लखन लाल का नगर निराला ।।

पूज्य गुरूदेव का आवास जहाँ, प्रभु की कथा की खान यहाँ।
जग में ऐसा आनन्द कहाँ, प्रभु सेवा का अभियान यहाँ ।।

पूज्य गुरूदेव का पूरा परिवार, प्रभु से करता बहुत प्यार ।
सबको जोड़कर बनाया प्रभु सेवा परिवार, जिससे हो जाये हम सबका उद्धार।।

प्रेरणा के प्रकाश पुन्ज - लाला ओमचन्द गर्ग संस्थापक चण्डीगढ़ भवन हरिद्वार

श्री बलवीर कृष्ण गर्ग
प्रधान
चंण्डीगढ़ भवन (हरिद्वार)

ईश्वर द्वारा निर्मित इस सृष्टि में आवागमन का चक्र अनवरत गतिशील रहता है। परिणामस्वरूप दुर्लभ पुण्यात्माओं का यदा–कदा पदापर्ण भी होता रहता है। ऐसी दिव्यात्माएँ अपने क्षणभंगुर शरीर द्वारा कुछ विशिष्ट कार्यकलापों के माध्यम से जगत में अपनी अनूठी व अविस्मरणीय छाप छोड़ जाते है। इसी क्रम में श्रद्धेय लाला ओम चन्द गर्ग का नाम भी आदर व सम्मान के साथ लिया जाता है, जिन्होन प्रभु चरणों में विश्राम पाने से पूर्व अपने भगीरथ पयत्नों के फलस्वरूप अपने पिता श्री प्रातः स्मरणीय माई दित्ता मल जी की इच्छा पूर्ण करने हेतु हरिद्वार जैसे तीर्थ स्थल में एक भव्य एवं दर्शनीय आश्रम का निर्माण करवाया ।

चण्डीगढ़ भवन में कुल 45 कमरे है जिनमे आधुनिक सुख सुविधा का पूरा ध्यान रखा गया है। जिसके अन्तर्गत प्रत्येक रूम में ए.सी. (Air Condition) मनोरंजन हेतु टी.वी., अलमारी, टेबल, कुर्सिया, कमोड (बाथरूम), सावर की भी उचित व्यवस्था है। प्रत्येक मंजिल के लिए लिफ्ट (Lift) की भी व्यवस्था अन्य सुविधाओं में शामिल है। इसीलिए ''चण्डीगढ़ भवन'' हरिद्वार का सबसे प्रथम व उत्तम भवन है– जिसमें यात्रियों को घर जैसा वातावरण व भोजन की व्यवस्था उपलब्ध होती है। प्रत्येक रूम में तीन बैड की व्यवस्था है। कुछ आठ बैड वाले कमरे है, जो एक पूरे परिवार के लिए पर्याप्त है।

लाला ओमचन्द गर्ग जी का जन्म 15/04/1934 में पंजाब प्रान्त के सैदेवाला गाम में हुआ । वे एक धनाड्य कृषक परिवार से सम्बन्ध रखते थे। कृषि ही उनका मुख्य व्यवसाय था । तदोपरान्त जब वे युवा अवस्था को प्राप्त हुए तो उन्होने अपना व्यापार बढ़ाया और खेती बाडी के अतिरिक्त शहर में आकर कई अन्य व्यवसायों में हाथ आजमाया । सफलता मिलती रही, असी का परिणाम था कि वे समाज सेवा की ओर उन्मुख हुए और उन्होने निश्चय किया कि कुछ ऐसा कार्य अवश्य करें जो अनमानस के हृदय में एक अमिट छाप छोड़ जाये। इस कार्य में पत्नी और बच्चों का भी पूरा सहयोग प्राप्त हुआ । ''नर सेवा नारायण सेवा को आत्मसात किया और परिवार की जिम्मेदारियों का निर्वहन करने के साथ–साथ अपने दृढ़ संकल्प व दूर दृष्टि से समाज सेवा में अग्रसर रहे।

लाला ओम चन्द गर्ग सैदेवाला चैरिटेबल ट्रस्ट के नाम से पंजीकृत इस ट्रस्ट में उनके परिवार पुत्र, पुत्री व अन्य सहयोगी सदस्य है। मैं बलवीर गर्ग इस संस्था का प्रधान हूँ तथा श्री भूषण गर्ग, कृष्ण गोपाल गर्ग, श्रीमति किरण, श्रीमति सरोज व अन्य भी इसके पदाधिकारी है। यही पदाधिकारी अब उनकी अनुपस्थिति में इस भवन की देख–रेख करते है। लाला ओम चन्द गर्ग का समाज के प्रति योगदान को नही भुलाया जा सकता । अपनी जीवन यात्रा पूरी कर तथा सारी जिम्मेदारियों से निवृत होकर 23/06/2022 को इस नश्वर जगत को अलविदा कह कर प्रभु चरणों में समाहित हो गये ।

आपको चण्डीगढ़ भवन के बारे में अवश्य ज्ञात होगा यह एक अनूठी धर्मशाला है जिसमें मुख्य द्वार के साथ माता–पिता (श्रीमति सरबती देवी एवं गोलोक वासी श्री लाला ओम चन्द गर्ग) का भव्य मन्दिर के साथ राम दरबार, भगवान शिव, माँ दुर्गा, हनुमान जी, शिव परिवार के अतिरिक्त प्रांगण में प्रवेश द्वार में प्रथम तल पर राधा कृष्ण का मन्दिर है। भवन में आध्यात्मिक वातावरण है। कथा एवं अन्य धार्मिक गतिविधियों का आयोजन भी निर्वाध रूप से होता रहता है। सम्पूर्ण भारत देश के कोने–कोने से यहाँ पर आगन्तुक आते है तथा इस गौरवशाली भवन में विश्राम कर अपने को धन्य समझते है।

सनातन धर्म, विज्ञान और गुरू

सुश्री शिप्रा दीक्षित
लखनऊ (उ.प्र.)

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब सभी वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अत्यधिक महत्व देते है, सनातन धर्म की वैज्ञानिकता व प्रमाणिकता को समझना अत्यन्त सरल हो गया है। उदाहरणार्थ :

ब्लैक होल – जिसमें अत्यधिक गुरूत्वाकर्षण बल होने के कारण सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अपने अन्दर समाहित करने की क्षमता है। और सर्वविदित है : 'कर्षति आकर्षति इति कृष्णः' 'जो खीचता है आकर्षित करता है वह कृष्ण है।' श्रीमद् भागवत् जी में श्री कृष्ण है।' श्रीमद्भागवत जी में श्री कृष्ण ने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अपने मुँह में माँ यशोदा जी को दिखाने की लीला की थी ।

गॉड पार्टिकल – वह सूक्ष्मतम् कण जिसे ब्रह्माण्ड में सभी स्थानों पर उपस्थित बताया गया । हमें तो यह ज्ञान बहुत पहले ही प्राप्त हो चुका है:

अखण्ड मण्डालाकारं व्याप्तं येन चराचरं
तत् पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः

विचारणीय है कि इसे गुरू या गुरूत्वाकर्षण बल का नाम ही क्यों दिया गया ?
इसका एक उत्तर यह हो सकता है कि सर्वविदित है सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ऊर्जा से निर्मित है जिसे नष्ट नहीं किया जा सकता बस उसके रूप परिवर्तित किए जा सकते हैं। गुरूत्वाकर्षण बल : वह बल जिसके कारण यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड सुचारू रूप से संचालित हो रहा । आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य में गुरूत्व अर्थात् गुरू के प्रति भाव सच्ची श्रद्धा । 'बल अर्थात् प्रेरणा' गुरू के प्रति श्रद्धा भाव हमें उस मार्ग पर चलने का बल एवं प्रेरणा प्रदान करता है जिस मार्ग पर चलते हुए हम उस परमसत्ता रूपी ब्रह्माण्डीय ऊर्जा से एकाकार हो जाते हैं जिसमें विलीन होने के पश्चात् जन्म मृत्यु रूपी चक्र से विमुक्त होकर मोक्ष अर्थात् मुक्ति की प्राप्ति होती है। गुरू की महिमा के व्याख्यान का सामर्थ्य तो किसी में भी नहीं है परन्तु अल्पज्ञान से इतना विदित है कि यह मार्ग सरल तो नहीं है पर उनके लिए दुलर्भ भी नहीं है जिन्हे गुरू कृपा और गुरूसान्निध्य प्राप्त हो । इसीलिए कहा गया है–

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पांय ।
बलिहारी गुरू आपने गोविन्द दियो बताय ।।

हम सभी सौभाग्यशाली है जिन्हे इस घोर कलियुग में भी गुरू कृपा की प्राप्ति हुई है। गुरू जी के चरणारविन्दों में कोटि–कोटी प्रणाम और प्रभु से प्रार्थना कि हम सभी प्रभु सेवा परिवार के भक्तों को गुरूत्वाकर्षण बल अर्थात् गुरू जी की कृपा व आशीर्वाद निरन्तर प्राप्त होता रहे।

।। गुरूकृपा हि केवल ।।

गुरूमंत्र का प्रभाव

श्री सतीश श्रीवास्तव
राष्ट्रीय अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

'स्कन्द पुराण' के ब्रह्मोत्तर खण्ड में कथा आती है, काशी नरेश की कन्या कलावती के साथ मथुरा के दाशार्ह नामक राजा का विवाह हुआ । विवाह के बाद राजा ने अपनी पत्नी को अपने पलंग पर बुलाया परंतु पत्नी ने इन्कार कर दिया। तब राजा ने बल–प्रयोग की धमकी दी ।

पत्नी ने कहा, ''स्त्री के साथ संसार–व्यवहार करना हो तो बल–प्रयोग नही, स्नेह–प्रयोग करना चाहिए । नाथ ! मैं आपकी पत्नी हूँ, इसलिए आप मेरे साथ बल–प्रयोग करके संसार–व्यवहार न करें।''

आखिर वह राजा था । पत्नी की बात सुनी–अनसुनी करके नजदीक गया। ज्यों ही उसने पत्नी का स्पर्श किया त्यों ही उसके शरीर में विद्युत जैसा करंट लगा । उसका स्पर्श करते ही राजा का अंग–अंग जलने लगा । वह दूर हटा और बोलाः ''क्या बात है? तुम इतनी सुन्दर और कोमल हो फिर भी तुम्हारे शरीर के स्पर्श से मुझे जलन होने लगी?''

पत्नीः ''नाथ ! मैंने बाल्यकाल में दुर्वासा ऋषि से शिवमंत्र लिया था । वह जपने से मेरी सात्विक ऊर्जा का विकास हुआ है। जैसे, अँधेरी रात और दोपहर एक साथ नहीं रहते वैसे ही आपने शराब पीने वाली वेश्याओं के साथ और कुलटाओं के साथ जो संसार–भोग भोगे हैं, उससे आपके पाप के कण आपके शरीर में, मन में, बुद्धि में अधिक है और मैंने जो जप किया है उसके कारण मेरे शरीर में ओज, तेज, आध्यात्मिक कण अधिक है। इसलिए मैं आपके नजदीक नहीं आती थी बल्कि आपसे थोड़ी दूर रहकर आपसे प्रार्थना करती थी। आप बुद्धिमान हैं बलवान हैं, यशस्वी हैं धर्म की बात भी आपने सुन रखी है। फिर भी आपने शराब पीनेवाली वेश्याओं के साथ और कुलटाओं के साथ भोग भोगे हैं।''

राजाः ''तुम्हें इस बात का पता कैसे चल गया?''
रानीः ''नाथ ! हृदय शुद्ध होता है तो यह ख्याल आ जाता है।''
राजा प्रभावित हुआ और रानी से बोलाः ''तुम मुझे भी भगवान शिव का वह मंत्र दे दो।''
रानीः ''आप मेरे पति हैं। मैं आपकी गुरू नहीं बन सकती। हम दोनों गर्गाचार्य महाराज के पास चलते हैं।''
दोनों गर्गाचार्यजी के पास गये और उनसे प्रार्थना की । उन्होंने स्नानादि से पवित्र हो, यमुना तट पर अपने शिवस्वरूप के ध्यान में बैठकर राजा–रानी को निगाह से पावन किया। फिर शिवमंत्र देकर अपनी शांभवी दीक्षा से राजा पर शक्तिपात किया।

कथा कहती है कि देखते–ही–देखते कोटि–कोटि कौए राजा के शरीर से निकल–निकलकर पलायन कर गये। काले कौए अर्थात् तुच्छ परमाणु। काले कर्मो के तुच्छ परमाणु करोड़ों की संख्या में सूक्ष्म दृष्टि के द्रष्टाओं द्वारा देखे गये हैं। सच्चे संतों के चरणों में बैठकर दीक्षा लेने वाले सभी साधकों को इस प्रकार के लाभ होते ही हैं। मन, बुद्धि में पड़े हुए तुच्छ कुसंस्कार भी मिटते हैं। आत्म–परमात्माप्राप्ति की योग्यता भी निखरती है। व्यक्तिगत जीवन में सुख–शांति, सामाजिक जीवन में सम्मान मिलता है तथा मन–बुद्धि में सुहावने संस्कार भी पड़ते हैं। और भी अनगिनत लाभ होते हैं जो निगुरे, मनमुख लोगों की कल्पना में भी नहीं आ सकते। मंत्रीदीक्षा के प्रभाव से हमारे पंचभूत शरीरों के कुसंस्कार व काले कर्मो के परमाणु क्षीण होते जाते हैं। थोड़ी–ही देर में राजा निर्भार हो गया और भीतर के सुख से भर गया ।

शुभ–अशुभ, हानिकारक व सहायक जीवाणु हमारे शरीर में ही रहते हैं। पानी का गिलास होंठ पर रखकर वापस लायें तो उस पर लाखों जीवाणु पाये जाते है यह वैज्ञानिक अभी बोलते हैं, परंतु शास्त्रों ने तो लाखों वर्ष पहले ही कह दिया।

सुमति–कुमति सबके उर रहहिं।

जब आपके अंदर अच्छे विचार रहते हैं तब आप अच्छे काम करते हैं और जब भी हलके विचार आ जाते हैं तो आप न चाहते हुए भी कुछ गलत कर बैठते हैं। गलत करने वाला कई बार अच्छा भी करता है। तो मानना पड़ेगा कि मनुष्य शरीर पुण्य और पाप का मिश्रण है। आपका अंतःकरण शुभ और अशुभ का मिश्रण है। जब आप लापरवाह होते हैं तो अशुभ बढ़ जाता है। अतः पुरूषार्थ यह करना है कि अशुभ क्षीण होता जाय और शुभ पराकाष्ठा तक, परमात्म–प्राप्ति तक पहुँच जाय...

हरि भगत

श्री बलराम सिंह यादव
सेवा निवृत्त अध्यापक
लखीमपुर खीरी

सब कर फल हरिभगति सुहाई । सो बिनु संत न काहू पाई ।।
अस बिचारि जोई कर सतसंगा । रामभगति तेहिं सुलभ बिहंगा ।।

। श्रीरामचरितमानस ।

सभी साधनों का फल सुन्दर रामभक्ति है जो बिना सन्त के किसी ने प्राप्त नहीं की । हे गरूड़जी ! ऐसा विचारकर जो सत्संग करता है उसे प्रभु श्री रामजी की भक्ति सुगमता से प्राप्त हो जाती है।

।। जय सियाराम जय जय सियाराम ।।

भावार्थ :– यहाँ सभी साधनों का फल प्रभुश्री रामजी की भक्ति प्राप्त करना है। यहा,,

जप तप मख सम दम व्रत दाना । बिरति बिबेक जोग बिग्याना ।।
सब कर फल रघुपति पद प्रेमा । तेहि बिनु कोउ न पावइ क्षेमा ।।

तथा

जप तप नियम जोग निज धर्मा । श्रुति संभव नाना सुभ कर्मा ।।
ग्यान दया दम तीरथ मज्जन । जँह लगि धर्म कहत श्रुति सज्जन ।।
आगम निगम पुरान अनेका । पढ़े सुने कर फल प्रभु एका ।।
तव पद पंकज प्रीति निरंतर । सब साधन कर यह फल सुंदर ।।

पुनश्च

तीर्थाटन साधन समुदाई । जोग बिराग ज्ञान निपुनाई ।।
नाना कर्म धर्म ब्रत दाना । संजम दम जप तप मख नाना ।।
भूत दया द्विज गुर सेवकाई । बिद्या बिनय बिबेक बड़ाई ।।
जँह लगि साधन बेद बखानी । सब कर फल हरिभगति भवानी ।।

उपर्युक्त सभी प्रसंगों में साधनों को वृक्ष और भगवान की भक्ति को फल कहा गया है। अर्थात विभिन्न प्राकर के कर्म व ज्ञान आदि को वृक्षों के पत्ते, शाखाएँ व फूल आदि कहा गया है और प्रभु श्री रामजी की भक्ति को रसयुक्त फल कहा गया है।

प्रभु श्री की भक्ति प्राप्त करने के लिए सत्संग को अनिवार्य बताया गया है क्योंकि सत्संग ही प्रथम भक्ति है। यथा – प्रथम भगति संतन्ह कर संगा । सत्संग भी भगवान की कृपा से ही प्राप्त होता है। यथा –

संत बिसुद्ध मिलहिं परि तेही । चितवहिं राम कृपा करि जेहीं ।।

लँका में विभीषणजी ने श्री हनुमान जी से यही कहा थ –

अब मोहि भा भरोस हनुमंता । बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता ।।

विनय पत्रिका में भी गो0 जी कहते है–

जब द्रवै दीनदयालु राघव साधु–संगति पाइये । जेहि दरस–परस–समागमादिक पापरासि नसाइये ।।

अतः निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि बिना सन्त अथवा सत्संग के प्रभु श्री रामजी की भक्ति प्राप्त नही की जा सकती है।

।। जय राधा माधव जय कुंज बिहारी ।। ।। जय गोपी जन वल्लभ जय गिरिधर हरी ।।

आदर्श शिष्य

श्री रमेश कुमार दीक्षित
लखनऊ

करूणाखड्‌गपातेन छित्त्वा पाशाष्टकं शिशोः । सम्यगानन्दजनकः सदगुरू सोऽभिधीयते ।।
एवं श्रुत्वा महादेवि गुरूनिन्दा करोति यः । स याति नरकान् घोरान् यावच्चन्द्रदिवाकरौ ।।

करूणारूपी तलवार के प्रहार से शिष्य के आठों पाशों (संशय, दया, भय, संकोच, निन्दा, प्रतिष्ठा, कुलाभिमान और संपत्ति) को काटकर निर्मल आनंद देनेवाले को सदगुरू कहते हैं ऐसा सुनने पर भी जो मनुष्य गुरूनिन्दा करता है वह (मनुष्य) जब तक सूर्य चन्द्र का अस्तित्व रहता है तब तक घोर नरक में रहता है।

यावत्कल्पान्तको देहस्तावद्देवि गुरूं स्मरेत् । गुरूलोपो न कर्त्तव्यः स्वच्छन्दो यदि वा भवेत् ।।

हे देवी ! देह कल्प के अन्त तक रहे तब तक श्री गुरूदेव का स्मरण करना चाहिए और आत्मज्ञानी होने के बाद भी (स्वच्छन्द अर्थात् स्वरूप का छन्द मिलने पर भी) शिष्य को गुरूदेव की शरण नहीं छोड़नी चाहिए ।

हुंकारेण न वक्तव्यं प्राज्ञशिष्यै कदाचन । गुरूराग्रे न वक्तव्यमसत्यं तु कदाचन ।।

श्री गुरूदेव के समक्ष प्रज्ञावान् शिष्य को कभी हुँकार शब्द से (मैने ऐसे किया... वैसा किया) नहीं बोलना चाहिए और कभी असत्य नही बोलना चाहिए ।

गुरूं त्वंकृत्य हुंकृत्य गुरूसान्निध्यभाषणः । अरण्ये निर्जले देशे संभवेद् ब्रह्मराक्षसः ।।

गुरूदेव के समक्ष जो हुँकार शब्द से बोलता है अथवा गुरूदेव को तू कहकर जो बोलता है वह निर्जन मरूभूमि में ब्रह्मराक्षस होता है।

अद्वैतं भावयेन्नित्यं सर्वावस्थासु सर्वदा । कदाचिदपि नो कुर्यादद्वैतं गुरूसन्निधौ ।।

सदा और सर्व अवस्थाओं में अद्वैत की भावना करनी चाहिए परन्तु गुरूदेव के साथ अद्वैत की भावना कदापि नही करनी चाहिए ।

दृश्यविस्मृतिपर्यन्तं कुर्याद् गुरूपदार्चनम् । तादृशस्यैव कैवल्यं न च तव्द्यतिरेकिणः ।।

जब तक दृश्य प्रपंच की विस्मृति न हो जाय तब तक गुरूदेव के पावन चरणारविन्द की पूजा–अर्चना करनी चाहिए। ऐसा करने वाले को ही कैवल्यपद की प्राप्ति होती है इसके विपरीत करनेवाले को नही होती ।

अपि संपूर्णतत्त्वज्ञो गुरूत्यागी भवेद्दा । भवेत्येव हि तस्यान्तकाले विक्षेपमुत्कटम् ।।

संपूर्ण तत्त्वज्ञ भी यदि गुरू का त्याग कर दे तो मृत्यु के समय उसे महान् विक्षेप अवश्य हो जाता है।

गुरौ सति स्वयं देवी परेषां तु कदाचन । उपदेशं न वै कुर्यात् तदा चेद्राक्षसो भवेत् ।।

हे देवी ! गुरू के रहने पर अपने आप कभी किसी को उपदेश नहीं देना चाहिए । इस प्रकार उपदेश देनेवाला ब्रह्मराक्षस होता है।

न गुरूराक्षमे कुर्यात् दुष्पानं परिसर्पणम् । दीक्षा व्याख्या प्रभुत्वादि गुरोराज्ञां न कारयेत् ।।

गुरू के आश्रम में नशा नहीं करना चाहिए टहलना नही चाहिए । दीक्षा देना व्याख्यान करना प्रभुत्व दिखाना और गुरू को आज्ञा करना ये सब निषिद्ध हैं।

नोपाश्रमं च पर्यकं न च पादप्रसारणम् । नांगभोगादिकं कर्यात्र लीलामपरामपि ।।

गुरू के आश्रम में अपना छप्पर और पलंग नहीं बनाना चाहिए (गुरूदेव के सम्मुख) पैर नहीं पसारना, शरीर के भोग नहीं भोगने चाहिए और अन्य लीलाएँ नहीं करनी चाहिए ।

गुरूणां सदसद्वापि यदुक्तं तन्न लंघयेत् । कुर्वन्नाज्ञां दिवारात्रौ दासवन्निवसेद् गुरौ ।।

गुरूओं की बात सच्ची हो या झूठी, परन्तु उनका कभी उल्लंघन नहीं करना चाहिए । रात और दिन गुरूदेव की आज्ञा का पालन करते हुए उनके सान्निध्य में दास बन कर रहना चाहिए ।

अदत्तं न गुरोर्द्रव्यमुपभुंजीत कहिर्चित् । दत्तं च रंकवद् ग्राह्यं प्राणोप्येतेन लभ्यते ।।

जो द्रव्य गुरूदेव ने नहीं दिया हो उसका उपयोग कभी नहीं करना चाहिए । गुरूदेव के दिये हुए द्रव्य को भी गरीब की तरह ग्रहण करना चाहिए । उससे प्राण भी प्राप्त हो सकते है।

पादुकासनशय्यादि गुरुणा यदभिष्टितम् । नमस्कुर्वीत तत्सर्व पादाभ्यां न स्पृशेत् कचित् ।।

पादुका आसन बिस्तर आदि जो कुछ भी गुरूदेव के उपयोग में आते हों उन सब को नमस्कार करने चाहिए और उनको पैर से कभी नहीं छूना चाहिए ।

गच्छत: पृष्ठतो गच्छेत् गुरूच्छायां न लंघयेत् । नोल्बणं धारयेद्वेषं नालंकारास्ततोल्बणान् ।।

चलते हुए गुरूदेव के पीछे चलना उनकी परछाई का भी उल्लंघन नहीं करना चाहिए । गुरूदेव के समझ कीमती वेशभूषा आभूषण आदि धारण नहीं करने चाहिए ।

गुरुनिन्दाकरं दृष्ट्वा धावयेदथ वासयेत् । स्थानं वा तत्परित्याज्यं जिह्वाच्छेदाक्षमो यदि ।।

गुरुदेव की निन्दा करनेवाले को देखकर यदि उसकी जिह्वा काट डालने में समर्थ न हो तो उसे अपने स्थान से भगा देना चाहिए । यदि वह ठहरे तो स्वयं उस स्थान का परित्याग करना चाहिए ।

मुनिभि: पन्नगैर्वापि सुरैवा शापितो यदि । कालमृत्युभयाद्वापि गुरु: संत्राति पार्वति ।।

हे पार्वती ! मुनियों पन्नगों और देवताओं के शाप से तथा यथा काल आये हुए मृत्यु के भय से भी शिष्य को गुरूदेव बचा सकते है।

(स्कन्द पुराण से साभार)

प्रभु सेवा परिवार

श्री अलेन्द्र कौशिक
गुरुग्राम (हरियाणा)

गुरूजी के संरक्षण में, भाई सतीश जी के अध्यक्षता मे, चल रहा, प्रभु सेवा परिवार ।
अल्प समय में बढ़ गया। मधुर परिचय और प्यार ।।
सामाजिक कार्य कर रहे, एक ही नहीं अनेक। प्रभु कृपा बनी रहे, जुड़े सब नेक से नेक ।।
शिक्षा का भी हो रहा, बहुत अधिक विस्तार । कर्तव्य ही केवल कर रहे, ना मांग रहे अधिकार।।
स्थापना दिवस मना रहे, इस परिवार का हम आज। अपनी सेवा कथाओं से, कर रहे दिलों पर राज।।
ऐसे गुरूजी जिनको मिले, धन्य है वह सब लोग। गुरू जी की कृपा से कटेगें, तन मन के सब रोग।।
दीर्घायु होवे हमारे गुरू जी, करते रहे कथा। जन समान्य की हर तरह से, दूर हो सभी व्यथा।।
हृदय से हम कर रहे, गुरू जी को प्रणाम । इसी तरह चलता रहे, सेवा कार्यो के काम।।
हमें पूर्ण विश्वास है, सुखद होंगे परिणाम । ऐसे सच्चे गुरू जी को, है दंडवत प्रणाम ।।

प्रकृति संरक्षण ईश्वर की उपासना

श्री सत्य प्रकाश राय
प्रयागराज (उ. प्र.)

ईश्वर ने मानव और जीव जन्तुओ तथा पशु पक्षियो के लिए जो संसाधन दिये है वह प्रकृति के रूप में हमारे समक्ष विद्यमान है। जल और वायु के विना जीवन नही है। धरती पर जो भी बनस्पतियां और पेड पौधे उपलब्ध है वह जल के विना सम्भव नही है जहां जल नही वहां कुछ नही । धरती पर उपलब्ध वृक्षो और बनस्पतियों से ऑक्सीजन युक्त हवा मिलती है जो प्रतिपल जीवन के लिए आवश्यक होती है क्योकि बिना आक्सीजन युक्त वायु के कोई जीवित नही रह सकता है। वायु के सहारे ही समुद्र से जल के कण बादल बनकर चारो तरफ फैलते है और धरती पर प्रचुर मात्रा में जल बृष्टि करते है और वही जल धरती मे रिचार्ज होता है तालाब झील और नदियो मे आता है। धरती मे जो जल इकट्ठा होता है वह जब हैन्ड पम्प बोरिंग नलकूप के माध्यम से मिलता है वह धरती की तमाम सतहो के माध्यम से गुजरता हुआ शुद्ध होकर मिलता है जो पीने लायक हो जाता है वही जल खेती की सिचाई के काम आता है और उसी जल के सहारे पेड पौधे बनस्पतियां और फसले उत्पन्न होती है जिससे मानव और जीव जन्तुओ तथा पशुपक्षियो का जीवन चलता है।

ईश्वर ने इन प्राकृतिक सम्पदाओ के संरक्षण की जिम्मेदारी मनुष्य को दिया है। अगर मनुष्य इस उत्तरदायित्व को निभायेगा नही तो प्राकृतिक सम्पदाओ का आभाव हो सकता है। हम अपनी आवश्यकताओ के लिए लकड़ी का उपयोग करते है ऐसी स्थिति मे बन सम्पदाओ की कमी होती रहती है। हमारी जिम्मेदारी है कि धरती पर पर्याप्त बन सम्पदाये उपलब्ध रहे ताकि न तो आक्सीजन युक्त हवा की कमी होने पाये और न उपयोग के लिए लकड़ी की कमी हो । इसी लिए बडे पैमाने पर प्रति वर्ष पौधे लगाने का अभियान चलाया जाता है इसे सामाजिक आन्दोलन बनाये जाने की जरूरत है। हमारे शास्त्रो मे इसीलिए वृक्ष को देवता कहा गया विशेष रूप से कुछ ऐसे पेड है जो हम काटने से डरते है जैसे पीपल और बरगद । गीता मे भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि वृक्षो में मै पीपल हूँ। हम बरगद की भी पूजा करते है क्योकि बरगद में हम भगवान शंकर का रूप देखते है जो समाज का संरक्षण करता है। पाकड भी बहुत छाया देता है जिसमें हम भगवान ब्रह्मा का रूप देखते है यह पेड हमे पर्याप्त छाया देता है। इसीलिए पीपल बरगद और पाकड हम काटते नही है और इन पेडो के समूह को हरिशंकरी कहते है।

जल और वायु एक दूसरे के पूरक है अगर वायु नही होती तो जल नही होगा और अगर जल नही होगा तो वायु नही होगी । यह दोनो नही होगा तो मानव और पशु पक्षी जीव जन्तु नही होगे। मनुष्य की यह जिम्मेदारी है कि बरसात के माध्यम से जो जल धरती पर आता है वह नदी तालाब झील के रूप मे संरक्षित होने के साथ साथ पर्याप्त मात्रा मे धरती मे भी संरक्षित हो। धरती से जल का जितना हम दोहन करते है उससे अधिक मात्रा में धरती को जल देने की भी जरूरत है ताकि धरती में जल की कमी न पडे। इसीलिए धरती मे जल रिचार्ज करने के लिए अलग से व्यवस्था करना आवश्यक है। शहरो में बडी मात्रा में पक्की

सडक मकान आदि बन जाने के कारण वर्षा जल धरती मे रिचार्ज होने के बजाय बहकर चला जाता है जिससे महानगरो मे धरती में पानी की कमी हो जाती है और वाटर लेविल नीचे चला जाता है या विलकुल पानी की कमी पड सकती है जिससे जल संकट खडा हो सकता है इसलिए शहरो में भविष्य मे जल संकट न आवे इस हेतु वाटर रिचार्जिग व्यवस्था बनाना चाहिए ।

प्रकृति ने जल और वायु के अतिरिक्त बहुत सी व्यवस्थाएं दिया है जो उपयोगी है। धरती को उपजाऊ बनाये रखने के लिए केचुए होते थे जो धरती के नीचे से उपजाऊ मिट्टी लाते थे जिससे फसलो की उपज के लिए धरती को शक्ति मिलती थी लेकिन रसायनिक उर्बरको के प्रयोग से केचुए या तो मर गये या धरती में बहुत नीचे चले गये तथा केचुए पैदा नही हो रहे है जिससे धरती की उर्बरा शक्ति कमजोर हो रही है जो भविष्य के लिए घाटक है। चाहे मनुष्य का शरीर हो या धरती हम प्राकृतिक शक्ति से ही ताकतवर रह सकते है बाहरी दवाओ या उर्बरको के बल पर अधिक दिन तक शक्तिशाली नही रह सकते है इसकारण प्रकृति के विज्ञान को समझकर देशी गाय और उसके गौमूत्र से धरती की उर्बरा शक्ति बढाना चाहिए । इसीलिए देशी गाय को हम मां के रूप में मानते है। गाय न केवल दूध देती है बल्कि गोबर और गौमूत्र से धरती की शक्ति शाली बनाती है। इसलिए गौ संरक्षण पर हमे अधिक ध्यान देना चाहिए । भगवान श्रीकृष्ण गायो के बहुत बडे संरक्षक थे क्योकि गाय हमारी खेती का सबसे बडा आधार है। रसायनिक उर्बरको के कारण हम धरती को दिनोदिन कमजोर कर रहे है जो बडे संकट का कारण बन सकता है हमे प्राकृतिक गौआधारित खेती को बढावा देना चाहिए ।

वास्तव में प्रकृति ने हम सब कुछ दिया है जरूरत है उसे समझने की और जीवन मे ढालने की । यदि हम इसे नही समझेंगे तो मानव और जीवजन्तुओ का भविष्य अंधकार मय होगा और अगर हम समझकर इनका संरक्षण करेंगे तो ईश्वर द्वारा दी गयी व्यवस्था के हम संरक्षक बनेगे और यही सबसे बडी ईश्वर की पूजा है तथा मानवीय सेवा भी है क्योकि प्रकृति के रूप में भगवान हमे सब कुछ दिया है और प्रकृति को हरा भरा रखना ईश्वर की पूजा है।

सुन्दरकांड भजन

श्रीमती अन्जू श्रीवास्तव
ग्रेटर नोएडा

मैने सुन्दर कांड कराया है, मेरा हनुमान यहां आया है।

मंगल भवन अमंगल हारी, द्रवहु सुदसरथ अजिर बिहारी।
वो तो मंगल करने आया है मेरा हनुमान ....।

दीन दयाल विरद संभारी, हरहुं नाथ मम संकट भारी।
वो तो संकट हरने आया है। मेरा हनुमान ....।

जय जय जय हनुमान गोसांई, कृपा करहुँ गुरूदेव को नाई।
वो कृपा करने आया है। मेरा हनुमान ....।

भूत पिशाच निकट नहि आवे, महावीर जब नाम सुनावे।
वो तो भूत भगाने आया है। मेरा हनुमान ....।

अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता, अस वर दीन जानकी माता।
नव निधि को संग में लाया है। मेरा हनुमान ....।

संतो की वाणी संत जनों को समर्पित

श्री द्वारिका सिंह
सतना (म.प्र.)

सुमति कुमति सब कें उर रहहीं ।
नाथ पुरान निगम अस कहहीं ।।

मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने यह वर्णन किया है। वास्तव में हम आप सभी के भीतर सुमति और कुमति अवश्य ही बसती है। एक बार की बात है सुमति और कुमति में आपस में झगड़ा होने लगा कि दोनों एक दूसरे से अपने को अच्छा कह रही थी । दोनों बहनें आपस में लड़ाई–झगड़ा कर ही रही थी तभी दोनों ने आपस में कहा कि चलो – पिता जी के पास चले और निर्णय हो जाएगा कि दोनो में कौन अच्छा है तब दोनों अपने पिता ब्रह्मा जी के पास गई और अपने–अपने को अच्छा होने का निर्णय देने को कहा तब ब्रह्मा जी ने कहा कि तुम दोनो ही अच्छी हो तो दोनों नें कहा कि नहीं आप दोनों में से किसी एक को ही अच्छा कहें। तब ब्रह्माजी ने कहा कि तुम दोनों थोड़ा सा दस–बीस कदम चल के दिखाओ तो दोनों बहनें पिता के आज्ञानुसार आगें चल कर वापस लौट आई, फिर पिता जी से बोली कि अब बताइये कि कौन अच्छी है, तब ब्रह्मा जी ने कहा कि कुमति बेटी तुम जब यहां से जा रही थी तो बहुत अच्छी लग रही थी तथा सुमति तुम जब वापस आ रही थी तो अच्छी लग रही थी, तुम दोनो ही अच्छी हो अर्थात मनुष्य के जीवन से कुमति दूर चले जाने में तथा सुमति के आ जाने पर ही भलाई है, सुमति का अर्थ है सद्गुण तथा कुमति का अर्थ है दुर्गुण इसी लिए एक जगह प्रारम्भ में ही पूज्यपाद गोस्वामी तुलसीदास जी ने यह कहा है कि –

बंदऊ संत असज्जन चरना ।
दु:खप्रद उभय बीच कछु बरना ।।
बिछुरत एक प्रान हर लेही।
मिलत एक दारूण दुख देही ।।

अर्थात संत जनों के साथ रहने पर अत्यन्त सुख की अनुभूति होती है तथा कभी उनका साथ छूट जाने पर अत्यन्त कष्ट होता है। इसी प्रकार दुष्ट व्यक्ति के आ जाने पर ही अत्यधिक दुख हो जाता है तथा ऐसा लगने लगता है कि यह कितना जल्दी यहाँ से चला जाय । कहने का तात्पर्य यह है कि सुमति बुद्धि का जो संत है– उसके आने में ही खुशी होती है तथा दुष्ट बुद्धि कुमति विचार वाले को जाने में ही अत्यन्त प्रसन्नता आती है। इसलिए सदैव संतो का साथ ही करना चाहिये तथा असज्जन लोंगो से हमेशा दूरी बनाए रखना चाहिए ।

सुमति का सेवन तथा कुमति से परहेज ही मनुष्य को ऊँचा उठा सकता है। सभी को राम कथा (भगवान की कथा) जो कथामृत है सदैव पीना चाहिए । रामकथा अति पुरातन अति प्राचीन है, साथ ही साथ रामकथा नित नूतन नित नवीन है। आप सभी संतजनो को सादर प्रणाम, जय जय सियाराम, जय–जय सियाराम जय–जय सियाराम ।

ज्ञान पर चिंतन

श्री बलदाऊ जी श्रीवास्तव
लखनऊ

क्या आपने कभी एक बीज के अंदर देखा है कि उसमें (बीज में) क्या है ? महर्षि उछालक और उनके पुत्र श्वेतकेतु की वार्ता

बीज अंदर से खाली है, लेकिन फिर भी भरा है! श्वेतकेतु ने कम से कम बारह वर्षों तक कला... विज्ञान... और धर्म... का अध्ययन किया और विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि मिलने के साथ–साथ अपनी उत्कृष्टता के लिए विशेष सम्मान और हर संभव पुरस्कार प्राप्त करने पश्चात अपने घर लौटे । ''बेटा तुमने विश्वविद्यालय में क्या सीखा?'' श्वेतकेतु के पिता उछालक ने पूछा। ''पिता जी, मैंने वहाँ वह सब कुछ सीखा जो सीखा जा सकता था। मैं बहुत खुश हूँ कि मेरे कारण आप गौरव का अनुभव कर रहे हैं।'' श्वेतकेतु ने उत्तर दिया । इसके बाद उद्दालक ने कुछ भी नहीं कहा । लेकिन बेटे की बात सुनकर उन्हें अहसास हुआ कि उनके बेटे को अपने ज्ञान का अभिमान और घमंड होने लगा है और उनके बेटे को लगता है कि उसे सब कुछ आता है।

''पिताजी, आप क्या सोच रहे हैं? आप इतने चुप क्यों हैं?'' श्वेतकेतु ने पूछा ।

उद्दालक ने उत्तर दिया, ''मैं बस सोच रहा हूँ कि क्या तुम जानते हो कि अदृश्य को कैसे समझा जा सकता है?'' ''कैसे... क्या?'' श्वेतकेतु ने पूछा । उद्दालक ने कहा, ''तुमने मुझे अभी बताया कि तुमने वह सब कुछ सीखा है जो सीखा जा सकता था । लेकिन क्या तुम जानते हो कि नदी को पहाड़ों से समुद्र की ओर कौन ले जाता है? वाष्पीकरण, संघनन और बारिश का चक्र कौन बनाता है? और क्या तुम मुझे बता सकते हो, हर चीज का वास्तविक स्वरूप क्या है?''

श्वेतकेतु ने महसूस किया कि उसके पिता उसे कुछ बताने की कोशिश कर रहे थे, जो वह नहीं जानता । उद्दालक ने कहा, ''जाओ बेटा और अंजीर के पेड़ की एक नई कटी हुई डाली मेरे पास ले आओ।'' श्वेतकेतु फुर्ती से अंजीर की एक शाखा को काट कर–कर ले आया। जहाँ से वह शाखा कटी हुई थी, वह हिस्सा अभी भी गीला था । उद्दालक ने अपने बेटे श्वेतकेतु से पूछा, ''इस शाखा से रस टपक रहा है। यह रस पेड़ को जमीन से पोषण लेने में सक्षम बनाता है। तो क्या डाल तोड़ने से अब वह पेड़ मर जाएगा?'' उद्दालक ने आगे कहना जारी रखा, ''नहीं, लेकिन अगर पेड़ की सभी शाखाओं से जीवन देने वाला रस निकाल लिया जाये, तो वह जल्द ही सूख जाता और फिर पेड़ मर जाता ।'' यह सब सुनकर श्वेतकेतु अपने पिता के प्रति सम्मान की एक नई भावना को महसूस करने लगा। जब श्वेतकेतु अपने पिता के साथ बात कर रहा था, उसी समय कुछ लोगों का एक समूह एक शव को लेकर श्मशान घाट की तरफ जा रहा था। उद्दालक ने देखा कि शव को देखकर उनका बेटा श्वेतकेतु परेशान–सा हो गया था । उद्दालक ने समझाया, ''बेटा, जब कोई व्यक्ति मरता है, तो जीवन समाप्त नहीं होता, केवल शरीर ही नष्ट होता है।'' ''आपका क्या मतलब है, जीवन मरता नहीं है?'' श्वेतकेतु ने पूछा । उद्दालक ने कहा, '' मैं समझाता हूँ। जो मर नहीं सकता वह आत्मा है। यह हमारे दिलों के अंदर है,'' और हर जीवित और निर्जीव चीज में भी जो तुम अपने आस–पास देखते हो उसके अंदर भी यह मौजूद है। ''आप किस बारे में बात कर रहे हैं, मैने कभी आत्मा को नहीं देखा पिताजी?'' श्वेतकेतु ने आश्चर्य से पूछा। उद्दालक ने कहा, ''अंजीर के पेड़ पर जो पका हुआ अंजीर लटका हुआ है उसे तोड़ कर के मेरे पास लाओं। इसे काटो और मुझे बताओ कि तुम इसके अंदर क्या देखते हो?'' ''पिताजी, मुझे बहुत सारे छोटे बीज दिखाई दे रहे हैं।'' श्वेतकेतु ने उत्तर दिया। उद्दालक ने कहा, ''उन छोटे बीजों में से एक को आधा काटो और मुझे बताओं कि तुम उस बीज के अंदर क्या देखते हो?'' ''अंदर कुछ भी नहीं है!'' श्वेतकेतु हैरान रह गया । उद्दालक ने कहा, ''इस बीज के अंदर कुछ भी नही है, लेकिन इस बीज से अंजीर का पेड़ उगाया जा सकता है।''

''बीज में शून्यता का सार ही उसका चरम अस्तित्व है।''

''लेकिन जब हम सार को देख नहीं सकते हैं, तो हम कैसे कह सकते हैं कि वह मौजूद है?'' श्वेतकेतु ने आश्चर्य से पूछा। उसे भीतर ही भीतर अहसास होने लगा कि वह बहुत कुछ नहीं जानता है! उद्दालक ने अपने पुत्र से कहा, ''मैं तुम्हें समझाता हूँ। नदी से एक गिलास पानी भरो और फिर उस पानी में थोड़ा नमक डाल दो और फिर कल सुबह मेरे पास वह पानी का गिलास ले कर आना।'' श्वेतकेतु ने वह सब किया जो उसके पिता ने उसे करने का निर्देश दिया था ।

अगली सुबह, उद्दालक ने श्वेतकेतु से वह गिलास गिलास लिया और पूछा, ''तो, अब बताओ नमक कहाँ है?'' ''हम इसे नहीं देख सकते । यह पानी में घुल गया है।'' श्वेतकेतु ने उत्तर दिया ''तुम सही कह रहे हो । इस पानी का स्वाद चखो ।'' उद्दालक ने कहा । श्वेतकेतु ने गिलास से एक घूंट पानी पिया और कहा, ''ओह, यह नमकीन है, पिताजी'' उद्दालक ने कहा, ''तुम पानी में नमक नहीं देख सकते लेकिन वह उस पानी के अंदर मौजूद हैं। वेसे ही हम बीज के अंदर जीवन का सार या अस्तित्व नहीं देख पा रहे हैं। लेकिन वह उस बीज के अंदर मौजूद है।'' उन्होंने जारी रखा, ''जीवन के सार को आत्मा कहा जाता है, हमारे भीतर भी आत्मा, जीवन के मूल तत्व के रूप में विद्यमान है, श्वेतकेतु।''

आँखों में आँसू लिए श्वेतकेतु ने प्रणाम किया और पिता से आशीर्वाद मांगा । श्वेतकेतु को समझ आ गया था कि कोई भी शास्त्र उन्हें यह ज्ञान नहीं दे सकता था । श्वेतकेतु ने कहा, ''पिताजी मैं आपको कितना भी धन्यवाद दूँ वह सब इस ज्ञान के आगे कुछ भी नहीं है। आपने मुझे उस ज्ञान को हासिल करने में मदद की है जो अज्ञात को ज्ञात बनाता है, अदृश्य को दृश्य बनाता है और अकल्पनीय को समझने योग्य बनाता है।'' श्वेतकेतु ने कहा अपने पिता के साथ इस खूबसूरत अनुभव के बाद, श्वेतकेतु आगे चल कर खुद एक महान ऋषि बन गए ।

कुछ रिश्ते बहुत पवित्र होते हैं। वे जीवन पर एक शक्तिशाली प्रभाव छोड़ते हैं। कुछ रिश्ते बहुत ही शाश्वत होते हैं। कुछ रिश्ते इतने गहरे होते हैं कि वे रिश्तों के नियमों को भी चुनौती दे सकते हैं। इस कहानी में, एक पिता और पुत्र के बीच की बातचीत को उनके पवित्र रिश्ते के कारण लंबे समय तक याद किया जाता रहेगा ।

इस तरह के मार्मिक सम्बंध सर्वोत्तम ज्ञान सिखाने में मदद कर सकते हैं। वृक्ष बीज के भीतर की शून्यता से निकलता है। क्या ब्रह्मांड भी शून्यता से उत्पन्न हुआ है? ऐसे प्रश्नों का कोई निश्चित उत्तर नहीं है, हालांकि हम विज्ञान और सूचना के दायरे से परे सोचने की कोशिश कर सकते है।

दास ... अपने ऋषियों द्वारा गूढ़ विषयों को इतनी सरलता से समझाने के कौशल से अति प्रभावित है।... दास इसी प्रकार के कौशल को श्रद्धेय रमेश भाई शुक्ल ...... गुरूदेव में देखकर... पाकर इस जीवन की सार्थकता को फलीभूत करने में लगा हुआ है

देह रूपी मन्दिर

श्रीमती सुनीता कौशिक
गुरूग्राम

मन्दिर तुम्हारा ही प्रतिरूप है।
पद्मासन में तुम्हारी मुद्रा मन्दिर की ही प्रतिकृति (नकल) है।
जैसे आलथी–पालथी के जैसा चबूतरा,
धड़ जैसा चबूतरे पर मन्दिर का गोल कमरा,
सिर के जैसा गुम्बद, जूड़े जैसी कलश, कान और
आँख जैसी खिड़कियाँ, मुख जैसा दरवाजा,
आत्मा जैसी मूर्ति और मन जैसा पुजारी ।
तुम्हारी देह–मन्दिर में विदेही–परमात्मा बैठा है।
उस परमात्मा को पहचानना ही
इस देह–मन्दिर की प्राण प्रतिष्ठा है।

भगवन्नाम महिमा

पं० राम आधार पाण्डेय
प्रयागराज

मानव शरीर की शोभा मुख है। मुख की शोभा भगवान का नाम है। श्रीमद् भागवत महापुराण में यमराज ने अपने दूतों से कहा–

जिह्वा न वक्तिं भगवद् गुण नाम ध्येयं । चेतश्च न स्मरति तत् चरणार्विन्दम् ।।

भगवान के नाम में अभिन्तय शक्ति है। श्रीधर स्वामी ने अपनी भागवत गीता में लिखा है 'वस्तु शक्ति सान की अपेक्षा न ही रखती है।'' जैसे – कोई व्यक्ति अमृत जानकर पिये या अनजान में पिये अमर हुए बिना नही रह सकता । अग्नि को जानकर स्पर्श करे या अनजान में स्पर्श करे जले बिना नही रह सकता। इसी प्रकार भगवान का नाम भाव से ले या कुभाव से जप करें भव सागर से तरे बिना नही रह सकता । गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में लिखा–

भाय कुभाय अनख आलस हूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ।।
नाम जपहि जन आरत भारी । मिटहि कुसंकर होइ सुखारी ।।
मंत्र महामनि विषय व्यालके। मेटत कठिन कुअंक भाल के ।।
राम नाम मनि दीप धरू जीह देहरी द्वार । तुलसी भीतर बाहरेहु जौ चाहसि उजियार ।।
राम नाम भव भेषण हरनि घोर भय शूल । सोइ कृपाल मोहि तो पर सदा रहहि अनुकूल ।।

भगवान के नाम की बहुत महिमा है इस कलियुग में तो राम नाम ही अवलम्ब है। राम नाम ही आधार है। –

एहि कलिकाज न साधन दूजा । जोग जग्य जप तप व्रत पूजा । रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि। संतत सनिअ राम गुन ग्रामहि संतों । भक्तों ने गाया है।

आते भी राम बोलो, जाते भी राम बोलो । खाते भी राम बोलो, पीते भी राम बोलो ।।
सोते भी राम बोलो, जगते भी राम बोलो । तुम जब भी मुँह को खोलो, बस राम राम बोलो ।।
आराम की तलब है तो बस एक काम कर । आ राम की शरण में बस राम राम कर ।।

सभी भक्तों के लिए सीताराम जी से प्रार्थना एवं मंगल कामना के साथ –

जय सीता राम जय हनुमान

एक श्लोकी रामायण

आदौ राम तपोवनादि गमनं, हत्वा मृगं कांचनम् ।
वैदेहीहरणं जटायुमरणं, सुग्रीवसंभाषणम् ।।
बालीनिर्दलनं समुद्रतरणं, लंकापुरीदाहनम् ।
पश्चाद् रावण कुम्भकर्ण हननम्, एतद्धि रामायणम् ।।

एकश्लोकी श्रीमद्भागवत

आदौ देवकी–देवगर्भजननं गोपीगृहे वर्धनम् ।
मायापूतना जीवितापहरणं, गोवर्धनोधारणम् ।।
कंसच्छेदन कौरवादि हननं, कुन्ती सुतपालनम् ।
एतत् श्रीमद्भागवतपुराणकथितं, श्रीकृष्णलीलामृतम् ।।

हमारे सदस्यगण

प्रभु सेवा परिवार ने अपने उद्देश्य के प्रचार के लिए कई सदस्य बनाए हैं। सदस्यों के विवरण इस प्रकार है।

श्री सतीश श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1009

श्री निरंजन कु० अग्रवाल
सदस्य आईडी: 1016

श्री संजय कु० उपाध्याय
सदस्य आईडी: 1023

श्रीमती अंजू श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1010

श्री ललित प्र० जोशी
सदस्य आईडी: 1017

श्री जितेंद्र कु० उपाध्याय
सदस्य आईडी: 1024

श्री अभिषेक श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1011

श्री ओम प्रकाश पान्डेय
सदस्य आईडी: 1018

श्री अरविंद श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1025

श्री अरूण कुमार शुक्ला
सदस्य आईडी: 1012

श्री बलदाऊ जी श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1019

श्री बालमुकुंद पाण्डेय
सदस्य आईडी: 1026

श्री भूपेंद्र गुप्ता
सदस्य आईडी: 1013

श्री शिवपूजन लाल श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1020

श्री रमेश कुमार दीक्षित
सदस्य आईडी: 1027

श्री राकेश अग्रवाल
सदस्य आईडी: 1014

श्री विष्णु शंकर दूबे
सदस्य आईडी: 1021

श्रीमती इति अग्रवाल
सदस्य आईडी: 1028

श्री सत्येंद्र कु० श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1015

श्री संदीप सिंह
सदस्य आईडी: 1022

श्री जानकी प्रसाद माहेश्वरी
सदस्य आईडी: 1029

श्री बी० बी० लाल
सदस्य आईडी: 1030

श्री सत्य प्रकाश राय
सदस्य आईडी: 1038

श्री उमेश चन्द्र दीक्षित
सदस्य आईडी: 1046

श्री आर० पी० पाण्डेय
सदस्य आईडी: 1031

श्रीमती सुनीता उपाध्याय
सदस्य आईडी: 1039

श्री किशन दास तिवारी
सदस्य आईडी: 1047

श्री ए० एन० लाल श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1032

श्रीमती रंजना शुक्ला
सदस्य आईडी: 1040

श्री सोहन लाल शुक्ला
सदस्य आईडी: 1048

श्री ईश्वर शरण मिश्रा
सदस्य आईडी: 1033

श्रीमती अर्चना उपाध्याय
सदस्य आईडी: 1041

श्री राजेन्द्र नाथ चौबे
सदस्य आईडी: 1049

श्री विनोद शर्मा
सदस्य आईडी: 1034

श्री इकान्त गुप्ता
सदस्य आईडी: 1042

श्री बलराम सिंह यादव
सदस्य आईडी: 1050

श्री आशुतोष श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1035

श्री ओमप्रकाश पाण्डेय
सदस्य आईडी: 1043

श्री दिनेश कुमार शुक्ल
सदस्य आईडी: 1051

श्रीमती शिप्रा दीक्षित
सदस्य आईडी: 1036

श्री बृज राज पांडे
सदस्य आईडी: 1044

श्री प्रकाश शर्मा
सदस्य आईडी: 1052

श्री अलेन्द्र कुमार शर्मा
सदस्य आईडी: 1037

श्री सुशील कुमार शुक्ला
सदस्य आईडी: 1045

श्रीमती शीला शर्मा
सदस्य आईडी: 1053

श्री राम आधार पांडेय
सदस्य आईडी: 1054

श्री सूबेदार शुक्ल
सदस्य आईडी: 1055

श्री रघुवंशमणि तिवारी
सदस्य आईडी: 1056

श्रीमती अनुपमा थापर
सदस्य आईडी: 1057

श्री अवनीश कुमार मिश्रा
सदस्य आईडी: 1058

श्री निवास पांडे
सदस्य आईडी: 1059

श्री अंकित मिश्र
सदस्य आईडी: 1060

श्री प्रेम प्रकाश शर्मा
सदस्य आईडी: 1061

श्री राम शरण कूलवाल
सदस्य आईडी: 1062

श्री पतिराम कश्यप
सदस्य आईडी: 1063

श्रीमती उत्तरा कश्यप
सदस्य आईडी: 1064

श्री दाऊ लाल तिवारी
सदस्य आईडी: 1065

श्रीमती लक्ष्मी शर्मा
सदस्य आईडी: 1066

श्री शेष नारायण दुबे
सदस्य आईडी: 1067

श्री विनोद कुमार राय
सदस्य आईडी: 1068

श्री आनन्द प्रकाश मिश्रा
सदस्य आईडी: 1069

श्रीमति कुसुम पाण्डेय
सदस्य आईडी: 1070

श्री त्रिलोकी नाथ शर्मा
सदस्य आईडी: 1071

श्रीमती उर्मिला पाण्डेय
सदस्य आईडी: 1072

श्री सुभाष चन्द
सदस्य आईडी: 1073

श्रीमती ज्योत्सना शर्मा
सदस्य आईडी: 1074

श्री राम अवतार यादव
सदस्य आईडी: 1075

श्री विनोद वर्मा
सदस्य आईडी: 1076

श्रीमती किरन वर्मा
सदस्य आईडी: 1077

श्री अमित वर्मा
सदस्य आईडी: 1078

श्री हरिओम शुक्ला
सदस्य आईडी: 1079

श्री नन्दकिशोर मिश्रा
सदस्य आईडी: 1080

श्री अनुज शुक्ला
सदस्य आईडी: 1081

श्री अमन तिवारी
सदस्य आईडी: 1082

श्री विपिन सिंह
सदस्य आईडी: 1083

श्री सुरेन्द्र अग्रवाल
सदस्य आईडी: 1084

श्री गोपाल गुप्ता
सदस्य आईडी: 1085

श्रीमती ममता चौबे
सदस्य आईडी: 1086

श्रीमती सोनल खरे
सदस्य आईडी: 1087

श्रीमती अन्नपूर्ना राय
सदस्य आईडी: 1088

श्री गिरधारी लाल शर्मा
सदस्य आईडी: 1089

श्रीमती मन्जूला खरे
सदस्य आईडी: 1090

श्री विनय खरे
सदस्य आईडी: 1091

श्रीमती सुनीता पाण्डेय
सदस्य आईडी: 1092

श्रीमती मिथलेश शर्मा
सदस्य आईडी: 1093

श्री राजेन्द्र गर्ग
सदस्य आईडी: 1094

श्री द्वारिका सिंह
सदस्य आईडी: 1095

श्री बलबीर कृष्ण गर्ग
सदस्य आईडी: 1096

श्री राजेन्द्र कुमार
सदस्य आईडी: 1097

श्री सुरेश महा सेठ
सदस्य आईडी: 1098

श्री हरीश चन्द्र गोयल
सदस्य आईडी: 1099

श्रीमती सुशीला दीक्षित
सदस्य आईडी: 1100

श्रीमती सुनीता कौशिक
सदस्य आईडी: 1101

यात्रा एवं कथा में उत्कृष्ट सहयोग के लिए सम्मानित सदस्य गण

!! ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय !!

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

Regn. No. 1537/2021

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी
संस्थापक :- प्रभु सेवा परिवार

क्रमांक-01 दिनांक: 05/01/2022

सम्मान पत्र

श्री सुशील कुमार खन्डेलवाल

श्री सुशील कुमार खन्डेलवाल द्वारिकापुरी भागवत कथा दिनांक 24 दिसम्बर 2021 से 02 जनवरी 2022 के दौरान उत्कृष्ट सेवा एवं सहयोग के लिए सम्मान से विभूषित किया जाता है, हम कामना करते है भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहे।

अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

!! ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय !!

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

Regn. No. 1537/2021

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी
संस्थापक :- प्रभु सेवा परिवार

क्रमांक-02 दिनांक: 05/06/2022

सम्मान पत्र

श्री रमेश कुमार दीक्षित

श्री रमेश कुमार दीक्षित उत्तराखण्ड चारधाम यात्रा दिनांक 21 मई 2022 से 30 मई 2022 के दौरान उत्कृष्ट सेवा एवं सहयोग के लिए सम्मान से विभूषित किया जाता है, हम कामना करते है भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहे।

अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

!! ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय !!

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

Regn. No. 1537/2021

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी
संस्थापक :- प्रभु सेवा परिवार

क्रमांक-03 दिनांक: 11/01/2023

सम्मान पत्र

श्री अलेन्द्र कौशिक शर्मा

श्री अलेन्द्र कुमार शर्मा दक्षिण भारत की यात्रा एवं रामेश्वरम् धाम में संगीतम्य भव्य श्री राम कथा दिनांक 24 दिसम्बर 2022 से 7 जनवरी 2023 के दौरान उत्कृष्ट सेवा एवं सहयोग के लिए सम्मान से विभूषित किया जाता है हम कामना करते है भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहें।

अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

!! ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय !!

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

Regn. No. 1537/2021

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी
संस्थापक :- प्रभु सेवा परिवार

क्रमांक-04 दिनांक: 15/07/2023

सम्मान पत्र

श्रीमति अनुपमा थापर

श्रीमति अनुपमा थापर गुरू पुर्णिमा के शुभ अवसर पर श्री अयोध्या धाम में संगीतमय भव्य श्री राम कथा दिनांक 02 जुलाई 2023 से 10 जुलाई 2023 के दौरान उत्कृष्ट सेवा एवं सहयोग के लिए सम्मान से विभूषित किया जाता है हम कामना करते है भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहे।

अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

!! ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय !!

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

Regn. No. 1537/2021

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी
संस्थापक :- प्रभु सेवा परिवार

क्रमांक-05 दिनांक: 18/08/2023

सम्मान पत्र

श्री पतिराम कश्यप

श्री पतिराम कश्यप पुरूषोत्तम मास के शुभ अवसर पर श्री बैकुण्ठ धाम बद्रीनाथ में संगीतमय भव्य श्रीमद भागवत कथा दिनांक 09 अगस्त 2023 से 15 अगस्त 2023 के दौरान उत्कृष्ट सेवा एवं सहयोग के लिए सम्मान से विभूषित किया जाता है । हम कामना करते है भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहे।

अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

!! ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय !!

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

Regn. No. 1537/2021

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी
संस्थापक :- प्रभु सेवा परिवार

क्रमांक-06 दिनांक: 04/01/2024

सम्मान पत्र

श्री हरि बाबू गुप्ता

नये साल के शुभ अवसर पर श्री जगन्नाथपुरी धाम में संगीतमय भव्य श्रीमद भागवत कथा दिनांक 26 दिसम्बर 2023 से 01 जनवरी 2024 के दौरान उत्कृष्ट सेवा एवं सहयोग के लिए श्री हरि बाबू गुप्ता जी को सम्मान से विभूषित किया जाता है । हम कामना करते है भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहे।

अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

यात्रा एवं कथा में उत्कृष्ट सहयोग के लिए सम्मानित सदस्य गण

!! ॐ नमो भगवते वासुदेवाय !!

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

Regn. No. 1537/2021

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी
संस्थापक :- प्रभु सेवा परिवार

क्रमांक-07 दिनांकः 15/07/2024

सम्मान पत्र

श्री आशुतोष श्रीवास्तव

श्री अमरनाथ जी की यात्रा व बाबा बरफानी के दर्शन, माता खीर भवानी के दर्शन एवं श्रीनगर का सौन्दर्य दर्शन दिनांक 09 जुलाई 2024 से 12 जुलाई 2024 के दौरान उत्कृष्ट सेवा एवं सहयोग के लिए श्री आशुतोष श्रीवास्तव जी को सम्मान से विभूषित किया जाता है। हम कामना करते है भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहे।

अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

!! ॐ नमो भगवते वासुदेवाय !!

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

Regn. No. 1537/2021

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी
संस्थापक :- प्रभु सेवा परिवार

क्रमांक-08 दिनांकः 29/07/2024

सम्मान पत्र

श्री हरि करन पटेल

श्री वृन्दावन धाम में गुरू पूर्णिमा महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया उसके उपरान्त बृज चौरासी कोस की यात्रा दिनांक 20 जुलाई 2024 से 28 जुलाई 2024 तक बिना किसी वाधा के सम्पन्न हुआ। यात्रा के दौरान उत्कृष्ट सेवा एवं सहयोग के लिए श्री हरि करन पटेल जी को सम्मान से विभूषित किया जाता है। हम कामना करते है भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहे।

अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

!! ॐ नमो भगवते वासुदेवाय !!

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

Regn. No. 1537/2021

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी
संस्थापक :- प्रभु सेवा परिवार

क्रमांक-09 दिनांकः 14/02/2025

सम्मान पत्र

श्री आशुतोष पाण्डेय

महाकुम्भ 2025 के शुभ अवसर पर प्रयागराज कुम्भ क्षेत्र में ग्यारह दिवसीय श्री राम कथा का भव्य आयोजन दिनांक 02 फरवरी 2025 से 12 फरवरी 2025 तक बिना किसी वाधा के सम्पन्न हुआ। कथा के दौरान उत्कृष्ट सेवा एवं सहयोग के लिए श्री आशुतोष पाण्डेय को सम्मान से विभूषित किया जाता है। हम कामना करते है भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहे।

अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

!! ॐ नमो भगवते वासुदेवाय !!

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

Regn. No. 1537/2021

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी
संस्थापक :- प्रभु सेवा परिवार

क्रमांक-10 दिनांकः 13/03/2025

सम्मान पत्र

श्री आनन्द प्रकाश मिश्रा

शुक तीर्थ शुकताल में श्रीमद भागवत कथा ज्ञानयज्ञ का भव्य आयोजन दिनांक 04 मार्च 2025 से 11 मार्च 2025 तक बिना किसी वाधा के सम्पन्न हुआ। इस कथा के भव्य आयोजन, उत्कृष्ट सेवा एवं सहयोग के लिए श्री आनन्द प्रकाश मिश्रा को सम्मान से विभूषित किया जाता है। हम कामना करते है भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहे।

सतीश श्रीवास्तव
अध्यक्ष:प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

!! ॐ नमो भगवते वासुदेवाय !!

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

Regn. No. 1537/2021

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी
संस्थापक :- प्रभु सेवा परिवार

क्रमांक-11 दिनांकः 21/08/2025

सम्मान पत्र

श्री अभिषेक श्रीवास्तव

प्रभु सेवा परिवार द्वारा आयोजित दिनांक 15 अगस्त से 20 अगस्त 2025 तक गुरू जी के सानिध्य में **श्रीलंका की अद्भुत धार्मिक यात्रा** के दौरान उत्कृष्ट सेवा एवं सहयोग के लिए श्री अभिषेक श्रीवास्तव जी को सम्मान से विभूषित किया जाता है। हम कामना करते है भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहे।

अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

!! ॐ नमो भगवते वासुदेवाय !!

प्रभु सेवा परिवार
Prabhu Sewa Parivar

Regn. No. 1537/2021

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी
संस्थापक :- प्रभु सेवा परिवार

क्रमांक-12 दिनांकः 15/09/2025

सम्मान पत्र

श्री बलवीर कृष्ण गर्ग

प्रभु सेवा परिवार द्वारा आयोजित दिनांक 06 सितम्बर से 13 सितम्बर 2025 तक श्राद्ध पक्ष में पितरो के उद्धार हेतु हरिद्वार में **श्रीमद भागवत कथा ज्ञानयज्ञ** के दौरान उत्कृष्ट सेवा एवं सहयोग के लिए श्री बलवीर कृष्ण गर्ग जी को सम्मान से विभूषित किया जाता है। हम कामना करते है भगवान के चरणों में अनुराग ऐसे ही बढ़ता रहे।

अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

Add.: Plot NO. 30, Varun Enclave, Opp. Greater Valley School, Greater Noida-201310 (UP)
Contact No.: +91-8808836666 Email: prabhusewaparivar@gmail.com

Balance Sheet, Prabhu Sewa Parivar for the Year Ended 31 Mar 2025

Acknowledgement Number:785737621230925 **Date of filing : 23-Sep-2025**

INDIAN INCOME TAX RETURN ACKNOWLEDGEMENT

[Where the data of the Return of Income in Form ITR-1(SAHAJ), ITR-2, ITR-3, ITR-4(SUGAM), ITR-5, ITR-6, ITR-7 filed and verified]
(Please see Rule 12 of the Income-tax Rules, 1962)

Assessment Year 2025-26

PAN	AAETP8071E		
Name	PRABHU SEWA PARIVAR		
Address	Plot No-30 , Varun Enclave , Greater Noida , 31-Uttar Pradesh , 201310		
Status	05-AOP/BOI	Form Number	ITR-7
Filed u/s	139(1)-On or before due date	e-Filing Acknowledgement Number	785737621230925

Taxable Income and Tax Details	Current Year business loss, if any	1	0
	Total Income	1A	0
	Book Profit under MAT, where applicable	2	0
	Adjusted Total Income under AMT, where applicable	3	0
	Net tax payable	4	0
	Interest and Fee Payable	5	0
	Total tax, interest and Fee payable	6	0
	Taxes Paid	7	0
	(+) Tax Payable /(-) Refundable (6-7)	8	0
Accreted Income and Tax Detail	Accreted Income as per section 115TD	9	0
	Additional Tax payable u/s 115TD	10	0
	Interest payable u/s 115TE	11	0
	Additional Tax and interest payable	12	0
	Tax and interest paid	13	0
	(+) Tax Payable /(-) Refundable (12-13)	14	0

Income Tax Return electronically transmitted on 23-Sep-2025 12:34:05 from IP address 223.181.33.55 and verified by Satish Srivastava havinng PAN AGSPS4382D on 23-Sep-2025 using paper ITR-Verification Form/Electronic Verification Code ________ generated through ________ mode

System Generated Barcode/QR Code

AAETP8071E077857376212309256591f74ca94e6b6769533149410cce1c273d91bd

DO NOT SEND THIS ACKNOWLEDGEMENT TO CPC, BENGALURU

PRABHU SEWA PARIVAR
Balance Sheet as at 31-03-2025

(Amount in Rs.)

	Particulars	Note	31 March 2025	31 March 2024
I	**Sources of Funds**			
1	**NPO Funds**	3	444,973	482,310
(a)	Unrestricted Funds			
(b)	Restricted Funds			
			444,973	482,310
2	**Non-current liabilities**			
(a)	Long-term borrowings		-	-
(b)	Other long-term liabilities		-	-
(c)	Long-term provisions		-	-
			-	-
3	**Current liabilities**			
(a)	Short-term borrowings		-	-
(b)	Payables			
(c)	Other current liabilities		-	-
(d)	Short-term provisions		-	-
			-	-
	Total		444,973	482,310
II	**Application of Funds**			
1	**Non-current assets**			
(a)	Property, Plant and Equipment and Intangible assets	4		
(i)	Property, Plant and Equipment		119,994	-
(ii)	Intangible assets			
(iii)	Capital work in progress			
(iv)	Intangible asset under development			-
(b)	Non-current investments			
(c)	Long Term Loans and Advances			
(d)	Other non-current assets (specify nature)			
			119,994	-
2	**Current assets**			
(a)	Current investments			
(b)	Inventories			
(c)	Receivables			
(d)	Cash and bank balances	5	324,979	482,310
(e)	Short Term Loans and Advances			
(f)	Other current assets			
			324,979	482,310
	Total		444,973	482,310
	Brief about the Entity	1		
	Summary of significant accounting policies	2		
	The accompanying notes are an integral part of the financial statements			

KUMAR ABHAY & CO
Abhay Kumar
Membership Number: 541717
Proprietor
Kumar Abhay & Co.
Chartered Accountants
Firm Registration Number: 0025759C
UDIN 25541717BMIOR08406
Place: Muzaffarpur
Date 15/09/2025

PRABHU SEWA PARIVAR
Treasurer

For and on behalf of Prabhu Sewa Parivaar
PRABHU SEWA PARIVAR
President
Satish Srivastava (President)

PRABHU SEWA PARIVAR
Income and Expenditure for the year ended 31-03-2025

(Amount in Rs.)

	Particulars	Note	31 March 2025			31 March 2024		
			Unrestricted funds	Restricted funds	Total	Unrestricted funds	Restricted funds	Total
I	**Income**							
(a)	Donations and Grants		1,574,033	-	1,574,033	1,367,062	-	1,367,062
(b)	Fees from Rendering of Services							
(c)	Sale of Goods							
II	Other Income	6	5,082	-	5,082	6,703	-	6,703
III	Total Income (I+II)		1,579,115	-	1,579,115	1,373,765	-	1,373,765
IV	**Expenses:**							
(a)	Material consumed/distributed							-
(b)	Donations/contributions paid	7	1,366,210	-	1,366,210	1,060,500	-	1,060,500
(c)	Employee benefits expense							
(d)	Depreciation and amortization expense	8	79,996	-	79,996	-	-	-
(e)	Finance costs							
(f)	Other expenses	9	170,246	-	170,246	277,882	-	277,882
(g)	Religion/charitable expenses							
(h)	Other Expenses (specify nature)							
	Total expenses		1,616,452	-	1,616,452	1,338,382	-	1,338,382
V	Excess of Income overExpenditure for the year before exceptional and extraordinary items (III- IV)		-37,337	-	-37,338	35,383	-	35,383
VI	Exceptional items (specify nature & provide note/delete if none)		-	-	-	-	-	-
VII	Excess of Income over Expenditure for the year before extraordinary items (V-VI)		-37,337	-	-37,338	35,383	-	35,383
VIII	Extraordinary Items (specify nature & provide note/delete if none)		-	-	-	-	-	-
IX	Excess of Income over Expenditure for the year (VII-VIII)		-37,337	-	-37,338	35,383	-	35,383
	Appropriations Transfer to funds, e.g., Building fund							
	Transfer from funds							
	Balance tansferred to General Fund		-37,337	-	-37,338	35,383	-	35,383
	The accompanying notes are an integral part of the financial statements							

KUMAR ABHAY & CO
Abhay Kumar
Membership Number: 541717
Proprietor
Kumar Abhay & Co.
Chartered Accountants
Firm Registration Number: 0025759C
UDIN 25541717BMIOR08406
Place: Muzaffarpur
Date 15/09/2025

PRABHU SEWA PARIVAR
Treasurer

For and on behalf of Prabhu Sewa Parivaar
PRABHU SEWA PARIVAR
President
Satish Srivastava (President)

Funds Received/Donation	As on 31.03.2025	As on 31.03.2024
Donation Received	77,433	618,857
Membership Fees	6,300	4,200
Amarnath Yatra	380,000	-
Brij Chaurasi Khos Yatra	334,100	-
Donation For Telecasting	600,000	-
Mahakumbh Katha	176,200	-
Ayodhya Katha	-	68,801
Badrinath Katha	-	137,000
Jagannath Puri	-	538,204
Grand Total	1,574,033	1,367,062

Religious trips & Katha Expenses	As on 31.03.2024	As on 31.03.2023
Amarnath Expenses	516,210	-
Brij Chaurasi Expenses	300,000	-
Eduction Camp Expenses	150,000	-
Expenses for Telecasting	400,000	-
Ayodhya Katha	-	275,000.00
Badrinath Katha	-	225,000.00
Jagannath Puri	-	560,500.00
Grand Total	1,366,210	1,060,500.00

Other Expenses	As on 31.03.2024	As on 31.03.2023
Bank Charges	244	166
Bhandara Expenses	50,000	62,000
Office Expenses	-	11,128
Broadcasting Expenses	-	189,000
Telephone Expenses	-	3,588
Grand Total	50,244	265,882

प्रभु सेवा परिवार में वित्तीय वर्ष 2023–24 दान दाताओं के नाम

श्री उमेश मुरारी लाल चामरिया
मुम्बई
600000/–

FORM NO. 10BE
[See rule 18AB]
Certificate of donation under clause (ix) of sub-section (5) of section 80G and under clause (ii) to sub-section (1A) of section 35 of the Income-tax Act, 1961

e-Filing Anywhere Anytime
Income Tax Department, Government of India

ARN of form 10BE: AAETP8071E05251000001

Donee	(1) PAN of the the reporting person	AAETP8071E
	(2) Name of the reporting person	PRABHU SEWA PARIVAR
	(3) Address of the reporting person	30 VARUN ENCLAVE,GREATER NOIDA,Knowledge Park-I,Knowledge Park-I S.O,GAUTAM BUDDHA NAGAR,Uttar Pradesh,INDIA-201310
	(4) Unique Registration Number	AAETP8071E24LK01
	(5) Date of issue of Unique Registration Number	26-Dec-2024
Donor and donations	(6) Unique Identification Number	
	(a) ID Code	Permanent Account Number
	(b) Unique Identification Number	AAAPC4653K
	(7) Name of Donor	UMESH MURARILAL CHAMARIA
	(8) Address of Donor	Mumbai
	(9) Amount of donation Received	₹ 600,000
	(10)Financial year in which such donation was received	2024-25
	(11)Type of donation	Others
	(12)Section under which donation is eligible for deduction	Section 80G

This 10BE Certificate has been generated through Form 10BD filed by PRABHU SEWA PARIVAR vide 951823050020525 (10BD ARN) on 02 May 2025

Verification

I ,SATISH SRIVASTAVA Son of JAWAHAR LAL SRIVASTAVA solemnly declare that to the best of my knowledge and belief, the information given in the certificate is correct and complete and is in accordance with the provisions of the Income-tax Act, 1961. I further declare that I am making this certificate in my capacity as TRU and I am also competent to issue this certificate. I am holding permanent account number AGSPS4382D

सीशा ग्रीन टेक प्राइवेट लिमिटेड
नोएडा (उ.प्र.)
41000/–

FORM NO. 10BE
[See rule 18AB]
Certificate of donation under clause (ix) of sub-section (5) of section 80G and under clause (ii) to sub-section (1A) of section 35 of the Income-tax Act, 1961

e-Filing Anywhere Anytime
Income Tax Department, Government of India

ARN of form 10BE: AAETP8071E05251000002

Donee	(1) PAN of the the reporting person	AAETP8071E
	(2) Name of the reporting person	PRABHU SEWA PARIVAR
	(3) Address of the reporting person	30 VARUN ENCLAVE,GREATER NOIDA,Knowledge Park-I,Knowledge Park-I S.O,GAUTAM BUDDHA NAGAR,Uttar Pradesh,INDIA-201310
	(4) Unique Registration Number	AAETP8071E24LK01
	(5) Date of issue of Unique Registration Number	26-Dec-2024
Donor and donations	(6) Unique Identification Number	
	(a) ID Code	Permanent Account Number
	(b) Unique Identification Number	ABLCS1527K
	(7) Name of Donor	SISHA GREEN TECH PRIVATE LIMITED
	(8) Address of Donor	Noida
	(9) Amount of donation Received	₹ 41,000
	(10)Financial year in which such donation was received	2024-25
	(11)Type of donation	Others
	(12)Section under which donation is eligible for deduction	Section 80G

This 10BE Certificate has been generated through Form 10BD filed by PRABHU SEWA PARIVAR vide 951823050020525 (10BD ARN) on 02 May 2025

Verification

I ,SATISH SRIVASTAVA Son of JAWAHAR LAL SRIVASTAVA solemnly declare that to the best of my knowledge and belief, the information given in the certificate is correct and complete and is in accordance with the provisions of the Income-tax Act, 1961. I further declare that I am making this certificate in my capacity as TRU and I am also competent to issue this certificate. I am holding permanent account number AGSPS4382D

सरोज महेश्वरी
पटना
10000/–

FORM NO. 10BE
[See rule 18AB]
Certificate of donation under clause (ix) of sub-section (5) of section 80G and under clause (ii) to sub-section (1A) of section 35 of the Income-tax Act, 1961

e-Filing Anywhere Anytime
Income Tax Department, Government of India

ARN of form 10BE: AAETP8071E05251000003

Donee	(1) PAN of the the reporting person	AAETP8071E
	(2) Name of the reporting person	PRABHU SEWA PARIVAR
	(3) Address of the reporting person	30 VARUN ENCLAVE,GREATER NOIDA,Knowledge Park-I,Knowledge Park-I S.O,GAUTAM BUDDHA NAGAR,Uttar Pradesh,INDIA-201310
	(4) Unique Registration Number	AAETP8071E24LK01
	(5) Date of issue of Unique Registration Number	26-Dec-2024
Donor and donations	(6) Unique Identification Number	
	(a) ID Code	Permanent Account Number
	(b) Unique Identification Number	AFEPM4048M
	(7) Name of Donor	SAROJ MAHESHWARI
	(8) Address of Donor	Patna
	(9) Amount of donation Received	₹ 10,000
	(10)Financial year in which such donation was received	2024-25
	(11)Type of donation	Others
	(12)Section under which donation is eligible for deduction	Section 80G

This 10BE Certificate has been generated through Form 10BD filed by PRABHU SEWA PARIVAR vide 951823050020525 (10BD ARN) on 02 May 2025

Verification

I ,SATISH SRIVASTAVA Son of JAWAHAR LAL SRIVASTAVA solemnly declare that to the best of my knowledge and belief, the information given in the certificate is correct and complete and is in accordance with the provisions of the Income-tax Act, 1961. I further declare that I am making this certificate in my capacity as TRU and I am also competent to issue this certificate. I am holding permanent account number AGSPS4382D

प्रभु सेवा परिवार स्मारिका 2025 प्रकाशन में सहयोगियों के नाम

श्री आशुतोष श्रीवास्तव
साहस इन्टरनेशनल प्रा. लि.
ग्रेटर नोएडा (उ0प्र0)
सहयोग राशि – 21000/–

श्री राजेन्द्र नाथ चौबे
लखनऊ
सहयोग राशि – 1100/–

श्री रमेश कुमार दीक्षित
लखनऊ
सहयोग राशि – 1100/–

प्रभु सेवा परिवार कथा आयोजन समिति

प्रभु सेवा परिवार 2026 से कथा में सहयोगियों के नाम

हरिद्वार की कथा में गुरूजी के द्वारा आवाहन किया गया कि प्रभु सेवा परिवार में 25 सदस्य ऐसे जुड़ जाये जो वार्षिक कुछ धन राशि प्रभु सेवा परिवार के खाते में जमा किया जाये, जिससे किसी भी तीर्थ में कथा का आयोजन सुगमता पूर्वक किया जा सके। अगली कथाओं से (2026) सहयोग राशि का निर्धारण समिति से विचार विमर्श करके किया जायेगा। इस आवाहन में 12 लोगो ने अपना समर्थन व्यक्त किया था। जिनके नाम और राशि निम्न प्रकार है -

क्र.सं.	नाम	स्थान	यहयोग राशि
1.	श्री बलवीर कृष्ण गर्ग मो0 : 8630725374	चण्डीगढ़	51000 /- प्राप्त किया 13/09/2025
2.	श्री अलेन्द्र कौशिक मो0 : 9588290599	गुरूग्राम (हरियाणा)	51000 /- प्राप्त किया 15/09/2025
3.	श्री ओम प्रकाश राय मो0 : 9140561647	काशी (उ0प्र0)	51000 /-
4.	श्री धीरेन्द्र राय मो0 : 9455081988	लखनऊ (उ0प्र0)	51000 /-
5.	श्री श्री प्रकाश शर्मा मो0 : 9891912999	देहरादून (उत्तराखण्ड)	51000 /-
6.	श्री ओम प्रकाश पाण्डेय मो0 : 9711897756	फरीदाबाद (हरियाणा)	51000 /-
7.	श्री आनन्द प्रकाश मिश्रा मो0 : 9868970551	दिल्ली	51000 /-
8.	श्री द्वारिका सिंह मो0 : 9329548402	सतना (मध्य प्रदेश)	51000 /-
9.	श्री राकेश अग्रवाल मो0 : 9311736763	फरीदाबाद (हरियाणा)	51000 /-
10.	श्रीमति अन्जू श्रीवास्तव मो0 : 9871172841	ग्रेटर नोएडा (उ0 प्र0)	51000 /- प्राप्त किया 15/09/2025
11.	श्री सत्य प्रकाश राय मो0 : 9452367646	प्रयागराज (उ0 प्र0)	51000 /-
12.	श्री त्रिलोकी नाथ शर्मा मो0 : 9690700154	हरिद्वार (उत्तराखण्ड)	21000 /-

जो भी सदस्य इस अनुष्ठान मे जुड़ना चाहे वे सभी लोग सम्पर्क करें।

Mob.: 8808836666, 9839639952
Email: prabhusewaparivar@gmail.com

QR Code
Prabhu Sewa Parivar

प्रभु सेवा परिवार M/s. ASV Risk Advisory & Corporate Consultants LLP को उनकी उच्चतम सेवाओं के लिए विशेष आभार प्रकट करता है। हमारे प्रभु सेवा परिवार के लेखा–जोखा का प्रबंधन दक्षतापूर्वक कर रहे है। आशा करते है कि भविष्य में अपनी सेवायें देते रहेंगे।

प्रभु सेवा परिवार M/s. ASV Risk Advisory & Corporate Consultants LLP की सफलता की कामना करता है।

चण्डीगढ़ भवन हरिद्वार

लाला ओम चन्द गर्ग (सैदेवाला) चैरिटेबल ट्रस्ट

बलवीर कृष्ण गर्ग (प्रधान) - 9216607990

कथा कराने, ठहरने के लिए ए.सी. रूम व भोजन की उत्तम व्यवस्था बहुत ही कम कीमत पर उपलब्ध है।

गांव हरिपुर कलां सप्तर्षि रोड, शान्तिकुंज, गेट नं0–3 के सामने हरिद्वार

मो0 : 7310956909

प्रभु सेवा परिवार

PSP

Regn. No. 1537/2021

प्रथमं शैल पुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥
पंचम स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ।
सप्तम कालरात्रि च महागौरिति चाष्टमम् ॥
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः ।

श्रीं SAAHAS

GEYSERS * AIR COOLERS * FANS * APPLIANCES

Celebrating 25 Years of Excellence

Saahas International Pvt. Ltd.